



नए भवन की मांग को लेकर प्रदर्शन: पालको ने स्कूल में की तालाबंदी

बालोद। बालोद जिले के गोदूलमुंडाव गांव में प्राथमिक और माध्यमिक शाला के नए भवन की मांग को लेकर पालकों का आक्रोश सामने आया है। गुरुवार को उन्होंने स्कूल में तालाबंदी कर विरोध प्रदर्शन शुरू कर दिया। इस दौरान बच्चे गेट के सामने ही पढ़ाई करते नजर आए। दरअसल, प्राथमिक शाला और माध्यमिक शाला में कुल 41 बच्चे अध्ययनरत हैं। पालको का आरोप है कि स्कूल भवनों की स्थिति लंबे समय से खराब है, जिसके चलते बच्चों को अतिरिक्त कमरों में पढ़ाई करनी पड़ रही है। बताया जा रहा है कि करीब तीन साल पहले माध्यमिक शाला भवन की छत को नए सिरे से बनाने के लिए तोड़ा गया था, लेकिन अब तक भवन का निर्माण पूरा नहीं हो सका है। वहीं प्राथमिक शाला का भवन भी जर्जर हालत में है।

सुकमा नवोदय विद्यालय की छात्रा की तबीयत बिगड़ी

जगदलपुर। सुकमा के नवोदय विद्यालय में पढ़ने वाली एक छात्रा की तबीयत अचानक बिगड़ गई, परिवार का आरोप है कि स्कूल से तबीयत खराब होने की जानकारी मिलने के बाद पहले दवाई देकर छात्रा को घर भेज दिया गया. लेकिन उसकी हालत में कोई सुधार नहीं हुआ. इसके बाद पिता अपनी बेटी को लेकर छिंदगढ़ से जगदलपुर तक इलाज के लिए भटक रहा है. परजिन अशोक वर्मा का कहना है कि उनकी बेटी आंचल वर्मा सुकमा के नवोदय विद्यालय में पढ़ती है. नवोदय विद्यालय की नर्स के द्वारा उनकी बेटी की तबीयत खराब होने की जानकारी उन्हें मिली. उन्होंने एक गोली देकर घर भेज दिया.

धान के दानों से सजेगी भाइयों की कलाई: मुंगेली की महिलाओं ने धान

बिलासपुर। बिहान योजना से जुड़ी इन महिलाओं ने पारंपरिक सोच से हटकर स्थानीय संसाधनों का इस्तेमाल करते हुए राखियों के साथ हार और दूसरे आकर्षक आभूषण भी बनाए हैं। धान से तैयार राखियां देखने में बेहद खूबसूरत होने के साथ-साथ छत्तीसगढ़ की पहचान से भी जुड़ी हुई हैं। यही वजह है कि बाजार में पहुंचते ही इन राखियों ने लोगों का ध्यान अपनी ओर खींचना शुरू कर दिया है।

चित्रकोट का अद्भुत नजारा इंद्रावती नदी उफान पर

जगदलपुर। चारों तरफ हरियाली, आसमान में बादल और बीच में पूरे वेग से बहती बस्तर की इंद्रावती नदी। ड्रोन कैमरे के जरिए जरा आप भी देखिए देश के मिनी नियाग्रा चित्रकोट जलप्रपात का ये अद्भुत नजारा। इंद्रावती में पानी बढ़ने के बाद चित्रकोट की तस्वीर ही बदल गई है। दूर तक फैला नदी का पानी और फिर एक साथ कई धाराओं में नीचे गिरता विशाल जलप्रवाह बरसात में प्रकृति ने मानो चित्रकोट को एक नया रूप दे दिया है। आमतौर पर अपनी ऊंचाई और चौड़ाई के लिए पहचाना जाने वाला चित्रकोट जलप्रपात इन दिनों पानी बढ़ने की वजह से बिल्कुल अलग दिखाई दे रहा है। जलप्रवाह इतना बढ़ गया है कि अब पानी करीब 5 फीट की ऊंचाई से ही नीचे गिरता नजर आ रहा है. लेकिन खास बात ये है कि कम होती ऊंचाई के बावजूद पानी की चौड़ाई और उसका रौंदर वेग इस नजारे को और भी भव्य बना रहा है। दरअसल इंद्रावती नदी का उद्गम ओडिशा के कालाहांडी क्षेत्र से होता है। वहां और नदी के कैचमेंट वाले इलाकों में लगातार हो रही बारिश का असर अब बस्तर में साफ दिखाई दे रहा है।



नशा मुक्ति केंद्र के युवक ने किया आत्महत्या का प्रयास

गरियाबंद। जिले में संचालित नशा मुक्ति केंद्र में भर्ती एक युवक ने बाथरूम में फांसी लगाकर आत्महत्या करने का प्रयास किया। घटना की सूचना मिलते ही मौके पर पहुंची डायल 112 की टीम ने बाथरूम का दरवाजा तोड़कर युवक को बाहर निकाला और तत्काल अस्पताल पहुंचाया। युवक की हालत गंभीर होने पर उसे रायपुर रेफर किया गया है। जानकारी के अनुसार, धर्मराजी निवासी युवक को नशी की लत छुड़ाने के लिए घटना से एक दिन पहले ही नशा मुक्ति केंद्र में भर्ती कराया गया था। भर्ती होने के अगले ही दिन युवक ने बाथरूम में जाकर खुद को अंदर बंद कर लिया और फांसी लगाने का प्रयास किया। युवक के काफी



देर तक बाथरूम से बाहर नहीं आने पर केंद्र में मौजूद लोगों को संदेह हुआ। इसकी सूचना डायल 112 को दी गई। सूचना मिलते ही पुलिस टीम मौके पर पहुंची और बाथरूम का दरवाजा तोड़कर युवक को बाहर निकाला। इसके

बाद उसे तत्काल जिला चिकित्सालय गरियाबंद ले जाया गया। घटना की जानकारी मिलने के बाद समाज कल्याण विभाग के अधिकारी भी घटनास्थल पर पहुंचे। अधिकारियों ने मामले की जानकारी ली और घटना की जांच

कराए जाने की बात कही है। फिलहाल युवक ने यह कदम क्यों उठाया, इसके कारणों का स्पष्ट पता नहीं चल सका है। मामले की जांच के बाद ही घटना के पीछे की वजह सामने आने की उम्मीद है।

छत्तीसगढ़

दुर्ग में टगी का अनोखा खेल, 150 से ज्यादा पीड़ित पहुंचे अबतक थाने

दुर्ग एसएसपी ने कहा, हम जल्द आरोपियों तक पहुंचेंगे, शिकायत के आधार पर आगे की कार्रवाई जारी है। दुर्ग से अतुल कुमार शर्मा की रिपोर्ट।

दुर्ग। छत्तीसगढ़ पुलिस समय-समय पर लोगों को सायरर ठगी से बचाने के लिए जागरुकता अभियान चलाती रहती है। इन सबके बावजूद लोग ठगी के शिकार होने से खुद को नहीं बचा पा रहे हैं। ट्वीन सिटी भिलाई-दुर्ग से एक ऐसा ही मामला सामने आया है। यहां लोन दिलाने के नाम पर ठगी के बड़े खेल का खुलासा पुलिस ने किया है।

दुर्ग एसएसपी विजय अग्रवाल ने बताया कि अबतक 150 से ज्यादा लोग इस ठगी के शिकार हो चुके हैं। ठगी के शिकार अलग-अलग जिलों के हैं और अपनी शिकायत संबंधित थानों में दर्ज करा रहे हैं। पुलिस शिकायत के आधार पर आगे की जांच कर रही है। दुर्ग



एसएसपी विजय अग्रवाल ने बताया कि पुलिस दर्ज शिकायतों के आधार पर आरोपियों की पतासाजी में जुटी है। पीड़ितों की शिकायत और जांच में ये बात सामने आई है कि ठगी करने वाले आरोपी लोगों को इलेक्ट्रॉनिक सामान फाइनेंस कराने के नाम पर ठग रहे थे। पुलिस ने बताया कि ठगे गए ज्यादातर लोग दुर्ग, बालोद और पड़ोसी जिले बेमेतरा के रहने वाले हैं। पीड़ितों में कुछ दिव्यांग भी शामिल हैं। दुर्ग एसएसपी विजय अग्रवाल ने बताया कि

मरवाही में पटवारी पर जानलेवा हमला

सिर फोड़कर आरोपी मौके से फरार

गौरेला पेंड्रा मरवाही। मरवाही थाना क्षेत्र के बंशीताल-दानीकुंडी इलाके में हल्का क्रमांक 26 के पटवारी पर जानलेवा हमला हुआ है। इस हमले में पटवारी शुद्धराम कोल को गंभीर चोट आई है। घटना के बाद पटवारी को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है।वहीं वारदात के बाद मौके से फरार हो गया है।जिसकी तलाश पुलिस कर रही है।

जानकारी के अनुसार पटवारी शुद्धराम कोल दानीकुंडी के कार्यालय में थे। इसी दौरान सचराटोला निवासी प्रकाश सिंह कार्यालय पहुंचा। बताया जा रहा है कि शासकीय कार्य को लेकर दोनों के बीच विवाद हुआ। विवाद बढ़ने पर आरोपी ने कार्यालय में रखी लोहे की नल वाली पाइप उठाकर पटवारी के सिर पर वार कर दिया। अचानक हुए हमले में पटवारी के सिर से खून निकलने लगा और वह गंभीर रूप से घायल हो गए।घटना के बाद कार्यालय में अफरा-तफरी का माहौल बन गया। वारदात का एक वीडियो भी सामने आया है, जिसमें युवक पटवारी के साथ मारपीट करता हुआ दिखाई दे रहा है। वीडियो में आरोपी पटवारी के ऊपर बैठकर मारपीट करता नजर आ रहा है। घटना के दौरान कार्यालय में मौजूद लोगों ने बीच-बचाव का प्रयास किया। इसके बाद आरोपी कार्यालय से बाहर निकलकर मौके से फरार हो गया।घटना की सूचना पुलिस को भी दी गई। पुलिस ने



मामले की जांच शुरू करते हुए आरोपी की पतासाजी शुरू कर दी है। पुलिस घटना के कारण, विवाद की वास्तविक वजह और हमले में इस्तेमाल किए गए हथियार के संबंध में जानकारी जुटा रही है। पटवारी के कार्यालय में घुसकर हुए हमले की घटना से राजस्व विभाग के कर्मचारियों में भी चिंता का माहौल है। सरकारी कार्यालय में ड्यूटी कर रहे कर्मचारी की सुरक्षा को लेकर सवाल उठने लगे हैं। कर्मचारियों का कहना है कि शासकीय कार्य के दौरान अधिकारियों-कर्मचारियों के साथ इस तरह की हिंसक घटनाएं गंभीर चिंता का विषय हैं। फिलहाल आरोपी पुलिस की पकड़ से बाहर है।मरवाही पुलिस आरोपी के संभावित ठिकानों पर दक्षिण देकर तलाश कर रही है। पुलिस की जांच और आरोपी की गिरफ्तारी के बाद ही घटना के पीछे की पूरी वजह स्पष्ट हो सकेगी।

लिव-इन कपल का खौफनाक कदम, युवक-युवती मिले घायल

अंबिकापुर। अंबिकापुर के गांधीनगर थाना क्षेत्र में बुधवार सुबह लिव-इन रिलेशनशिप में रह रहे प्रेमी युगल से जुड़ी सनसनीखेज घटना सामने आई। किराए के मकान में लिव इन रह रहे युवक को गंभीर रूप से घायल होने के बाद मौके पर ही मौत हो गई, वहीं युवती को गंभीर हालत में मेडिकल कॉलेज अस्पताल में भर्ती कराया गया है। चिकित्सकों के अनुसार उसकी हालत फिलहाल खतरे से बाहर है। जानकारी के अनुसार दरिमा क्षेत्र निवासी मोहन पैकरा (28) और सूरजपुर जिले के कंदरई निवासी महिमा सिदार (26) के बीच करीब पांच साल से प्रेम संबंध था। दोनों पिछले करीब दो महीने से गांधीनगर थाना क्षेत्र में किराए के मकान में साथ रह रहे थे और एक दुकान में काम करते थे। बताया जा रहा है कि बुधवार सुबह जब महिमा बाथरूम से बाहर आई तो उसने मोहन को खून से लथपथ हालत में देखा, उसके गले पर गंभीर चोट के निशान थे। यह दृश्य देखकर महिमा भी घबरा गई और उसने भी कथित तौर पर चाकू से अपने गले पर वार कर लिया।

दुर्ग मेयर की कार में लगी भीषण आग बाल-बाल बचीं अलका बाघमार

दुर्ग नगर निगम परिसर में मेयर की इनोवा कार में अचानक लगी आग, 5 मिनट पहले ही गाड़ी से उतरकर वेंबर पहुंची थीं अलका

दुर्ग। नगर निगम परिसर में गुरुवार दोपहर महापौर अलका बाघमार की इनोवा गाड़ी में अचानक भीषण आग लग गई। गनीमत रही कि महापौर गाड़ी से उतर चुकी थीं, जिससे उनकी जान बाल-बाल बच गई। घटना पद्मनाभपुर थाना क्षेत्र की बताई जा रही है। फिलहाल फोरेंसिक विभाग भी मौके पर पहुंचा और जांच शुरू कर दिया है।

जानकारी के मुताबिक महापौर अलका बाघमार करीब 12~15 बजे नगर निगम कार्यालय पहुंचीं थीं। जैसे ही वह अपने चेंबर में गई उसके 5-10 मिनट बाद गाड़ी में अचानक आग भड़क उठी। देखते ही देखते आग ने पूरी गाड़ी को अपनी चपेट में ले लिया। गनीमत रही कि महापौर गाड़ी से उतर चुकी थीं, जिससे उनकी जान बाल-बाल



बच गई।

निगम परिसर में आग की खबर फैलते ही कर्मचारियों और आसपास मौजूद लोगों में हड़कंप मच गया। लोगों ने अपने स्तर पर आग बुझाने का प्रयास किया, पाइप से पानी का छिड़काव किया गया लेकिन आग इतनी तेज थी कि काबू पाना मुश्किल हो गया। सूचना मिलते ही फायर ब्रिगेड और पुलिस की टीम भी मौके पर पहुंची। फायर ब्रिगेड के जवानों ने कड़ी मशक़त के बाद आग पर काबू पाया, लेकिन तब तक इनोवा पूरी तरह जलकर खाक हो चुकी थी।

महापौर अलका बाघमार ने

कहा कि कोई तकनीकी समस्या रही होगी जिसकी जानकारी मुझे नहीं है। गाड़ी में कुछ दस्तावेज तो उतरते हुए निकाल लिए गए थे हालांकि गाड़ी का नुकसान तो हुआ है। उन्होंने कहा कि उन्हें किसी साजिश की आशंका नहीं है।

महापौर के मुताबिक महज 8 से 10 मिनट के भीतर पूरी गाड़ी जलकर खाक हो गई। उन्होंने कहा कि समय रहते वे गाड़ी से उतर गईं, वरना घटना और भी गंभीर हो सकती थी। फिलहाल पुलिस मामले की जांच कर रही है और आग लगने की वास्तविक वजह जांच के बाद ही स्पष्ट होगी।

इंस्टाग्राम रील से खुला वन्य जीव शिकार का राज, 3 आरोपी गिरफ्तार



दंतेवाड़ा। दंतेवाड़ा में सोशल मीडिया पर वायरल एक इंस्टाग्राम रील ने वन्य जीव शिकार के मामले का पर्दाफाश कर दिया। मामले में वन विभाग ने पुलिस की साइबर सेल की मदद से तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है.

जानकारी के अनुसार, इंस्टाग्राम रील में इंडियन मॉनिटर लिजार्ड का शिकार कर उसे खाने

का मामला सामने आने के बाद वन विभाग ने पुलिस की साइबर

सेल से संपर्क कर आरोपियों तक पहुंच बनाई. खुंटेपाल-श्यामगिरी

दुर्ग में स्वाइन फ्लू ने बढ़ाई चिंता, 6 संक्रमित मरीजों में 4 हुए स्वर

दुर्ग। जिले में स्वाइन फ्लू के मरीजों की संख्या बढ़कर 6 हो गई है। राहत की बात यह है कि इनमें से चार मरीज पूरी तरह स्वस्थ होकर घर लौट चुके हैं, जबकि दो मरीजों का उपचार अभी जारी है। इनमें से एक मरीज का इलाज एम्स रायपुर और दूसरे का सेक्टर-9 अस्पताल में चल रहा है।

स्वास्थ्य विभाग के अनुसार जिले में इन दिनों सर्दी, खांसी और बुखार जैसे लक्षणों वाले मरीज सामने आ रहे हैं। स्वाइन फ्लू के बढ़ते मामलों को देखते हुए जिला स्वास्थ्य विभाग ने जिले के सभी अस्पतालों को अलर्ट पर रखा है और संदिग्ध मरीजों की जांच व निगरानी के निर्देश दिए हैं।

जिला अस्पताल में स्वाइन फ्लू के संभावित मरीजों को अलग रखने और उपचार की व्यवस्था के लिए आइसोलेशन वार्ड तैयार किया गया है। स्वास्थ्य विभाग की ओर से



लोगों से सावधानी बरतने और लक्षण दिखाई देने पर समय पर चिकित्सकीय जांच कराने की अपील की गई है।

छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में भी स्वाइन फ्लू (H1H1) के 7 मरीज मिलने के बाद स्वास्थ्य विभाग अलर्ट मोड पर है। इनमें से 2 मरीजों का इलाज शहर के अपोलो हॉस्पिटल में जारी

है, जबकि 5 मरीज स्वस्थ होने के बाद अस्पताल से डिस्चार्ज हो चुके हैं।अस्पताल में भर्ती मरीजों में एक 75 वर्षीय महिला भी शामिल हैं। उनकी हालत फिलहाल खतरे से बाहर बताई जा रही है और उन्हें ड्यूट से बाहर लाया गया है। वहीं एक 30 वर्षीय मरीज की रायपुर की ट्रैवल हिस्ट्री भी सामने आई है

दो अलग-अलग हमलों में महिला समेत तीन घायल

गौरेला-पेंड्रा-मरवाही। गौरेला-पेंड्रा-मरवाही जिले के मरवाही वन परिक्षेत्र में भालुओं की मौजूदगी अब ग्रामीणों के लिए चिंता का कारण बनती जा रही है। एक ही दिन सामने आई भालू के हमले की दो अलग-अलग घटनाओं में एक महिला समेत तीन लोग घायल हो गए। सभी घायलों को उपचार के लिए प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र मरवाही में भर्ती कराया गया है। लगातार हुई इन घटनाओं के बाद जंगल से लगे गांवों में डर का माहौल है। पहली घटना नाका परिसर के कक्ष क्रमांक 2005 की बताई जा रही है। करीब 35 वर्षीय लालजी पिता सुकलाल अपने गाय-बैलों को चराने के लिए जंगल की ओर गया था। इसी दौरान अचानक उसका सामना भालू से हो गया। लालजी कुछ समझ पाता, इससे पहले ही भालू ने उस पर हमला कर दिया। हमले में वह घायल हो गया। घटना की जानकारी मिलते ही आसपास के लोगों ने मदद की और घायल लालजी को मरवाही के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाया, जहां उसका उपचार शुरू किया गया। दूसरी घटना शाम करीब 4~30 बजे हुई।

स्कूल केईन्ता अभियान से बदल रही बच्चों की तस्वीर

नारायणपुर। कलेक्टर नम्रता जैन के मार्गदर्शन में जिले के दूरस्थ एवं दुर्गम क्षेत्रों में बच्चों तक शिक्षा की पहुंच सुनिश्चित करने के लिए संचालित स्कूल केईन्ता अभियान लगातार सकारात्मक परिणाम दे रहा है। अभियान के तहत अब तक 2 हजार से अधिक बच्चों को शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ा जा चुका है तथा दुर्गम क्षेत्रों में 34 नई वैकल्पिक शालाएं शुरू की गई हैं। इन्हीं प्रयासों के तहत अब संकुल केंद्र गारपा अंतर्गत वैकल्पिक प्राथमिक शाला चमंडी के बच्चों को शैक्षणिक सुविधाओं के साथ आवश्यक दस्तावेज उपलब्ध कराने की दिशा में भी पहल की गई है। वैकल्पिक प्राथमिक शाला चमंडी में वर्तमान में कुल 30 बच्चे दर्ज हैं। इनमें गत वर्ष नामांकित 22 बच्चों के जाति प्रमाण पत्र बनवाकर उनका वितरण किया गया। इससे बच्चों और उनके अभिभावकों को आवश्यक दस्तावेज उपलब्ध कराने में सहायता मिली है तथा भविष्य में शैक्षणिक योजनाओं और विभिन्न सुविधाओं का लाभ प्राप्त करने का मार्ग भी सुगम होगा।

पाण्डेय,एसपी

इस कार्यक्रम को लेकर कलेक्टर जन्मेजय महोबे ने बताया कि 15 अगस्त से 2 अक्टूबर तक जांजगीर चांपा जिले में कार्यक्रम आयोजन किया जा रहा है।

इस कार्यक्रम को जिले के प्रत्येक ग्राम पंचायत के साथ शासकीय स्कूल-कॉलेज, जेल, शासकीय कार्यालय और जिले के प्लॉट में एक साथ आयोजित किया गया।सुबह 11 बजे से 12 बजे तक साइबर जागृति राखी पहनाई गई।

इस दौरान इस कार्यक्रम की मॉनिटरिंग जिला मुख्यालय ऑडिटोरियम में ऑनलाइन की गई। साइबर जागृति राखी को गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में दर्ज करने के लिए छत्तीसगढ़ प्रभारी सोनल शर्मा ने भी कार्यक्रम में निगरानी रखी।उन्होंने मंच से ही इस कार्यक्रम को ऐतिहासिक बताते हुए गोडन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में शामिल होने की घोषणा की।



फॉरेस्ट और महिला कमांडो को राखी के साथ तैनात किया गया।

अभियान में शामिल लोगों को एक साथ बैठकर साइबर जागृति संदेश के साथ साइबर जागृति राखी पहनाने का निर्देश दिया गया।सभी की ऑनलाइन मॉनिटरिंग की जा रही थी। तय समय में एक लाख से अधिक लोगों ने एक दूसरे के हाथ में साइबर जागृति राखी पहनाई जिससे हमारे जिले के एक लाख लोग एक साथ साइबर क्राइम के प्रति जागरूक हुए। इस तरह जिले का नाम गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में शामिल हो गया- विजय

नक्सल पीड़ित 5 परिवारों के सदस्यों

को मिली शासकीय सेवा

रायपुर। नक्सल हिंसा से प्रभावित परिवारों के



पुनर्वास और उन्हें समाज की मुख्यधारा से जोड़ने की दिशा में छत्तीसगढ़ शासन द्वारा किए जा रहे प्रयासों का सकारात्मक असर अब धरातल पर दिखाई दे रहा है। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में संचालित नक्सल पुनर्वास नीति के तहत मोहला-मानपुर-अंबागढ़ चौकी जिले के पांच नक्सल पीड़ित परिवारों के पात्र सदस्यों को शासकीय सेवा में नियुक्ति प्रदान की गई है। जिला कार्यालय में बुधवार को आयोजित बैठक के दौरान मोहला-मानपुर-अंबागढ़ चौकी जिले के कलेक्टर श्रीमती तनुजा सलाम ने नवनियुक्त कर्मचारियों को नियुक्ति पत्र प्रदान किए और उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दीं। नक्सल पीड़ित परिवारों के इन पांच सदस्यों की नियुक्ति आदिवासी विकास विभाग के अंतर्गत संचालित छात्रावास एवं आश्रमों में भृत्य पद पर की गई है। नियुक्ति पत्र प्राप्त करने वालों में रवि दुग्गा, अजय कुमार सलामे, दिलसाय कोरेटी, सुश्री समीला पूडो एवं सुश्री पायल ईश्वर पूडो शामिल हैं। शासकीय सेवा का अवसर मिलने से इन परिवारों को नियमित रोजगार के साथ आर्थिक स्थिरता मिलेगी और वे अपने परिवार की आवश्यकताओं को बेहतर ढंग से पूरा कर सकेंगे।

रक्षाबंधन पर केंद्रीय जेल रायपुर में

बंदियों से मिल सकेंगी बहनें

रायपुर। रक्षाबंधन के पावन पर्व पर केंद्रीय



जेल रायपुर में निरुद्ध बंदियों को उनकी बहनें राखी बांध सकेंगी। जेल प्रशासन ने 28 अगस्त को रक्षाबंधन के अवसर पर बंदियों से मुलाकात करने वाली बहनों एवं परिजनों के लिए विशेष दिशा-निर्देश जारी किए हैं। भाई-बहन के स्नेह और रिश्तों की भावनात्मक गरिमा को ध्यान में रखते हुए बहनों को निर्धारित समय में जेल परिसर में प्रवेश की अनुमति दी जाएगी। जेल प्रशासन द्वारा जारी सूचना के अनुसार 28 अगस्त को केवल बंदियों को राखी बांधने वाली बहनों को प्रातः 8 बजे से शाम 3 बजे तक जेल के अंदर प्रवेश की अनुमति होगी। सुरक्षा कारणों से सामान्य मुलाकात की व्यवस्था के बजाय रक्षाबंधन के लिए निर्धारित नियमों के तहत ही प्रवेश दिया जाएगा। बंदियों को राखी बांधने के लिए आने वाली बहनों के लिए अपने साथ पहचान-पत्र रखना अनिवार्य होगा। जेल में प्रवेश से पहले उनकी आवश्यक जांच की जाएगी और जांच के पश्चात ही प्रवेश की अनुमति दी जाएगी। जेल प्रशासन ने सभी आगंतुकों से सुरक्षा व्यवस्था में सहयोग करने की अपील की है।

मंदिर परिसर में भगवान की मूर्तियां

क्षतिग्रस्त, आक्रोशित लोगों का जमावड़ा

रायपुर। गुडियारी थोक मार्केट स्थित पड़ाव में गुब्बार सुबह धार्मिक स्थल में तोड़फोड़ की घटना सामने आने के बाद इलाके में तनाव की स्थिति बन गई। मंदिर परिसर में स्थापित साईं बाबा, हनुमान जी और शिव जी की प्रतिमाएं क्षतिग्रस्त मिलीं। घटना की सूचना मिलते ही बड़ी संख्या में बजरंग दल और विश्व हिंदू परिषद के कार्यकर्ता मौके पर पहुंच गए। पुलिस से भी तत्काल सक्रियता दिखाते हुए अतिरिक्त बल तैनात किया। जानकारी के अनुसार, गुडियारी पड़ाव क्षेत्र के मंदिर परिसर में भगवान शिव, हनुमान जी और साईं बाबा की प्रतिमाओं को नुकसान पहुंचाया गया। सुबह स्थानीय लोगों की नजर क्षतिग्रस्त प्रतिमाओं पर पड़ी। इसके बाद घटना की जानकारी तेजी से आसपास के क्षेत्र में फैल गई और मौके पर लोगों की भीड़ जुटने लगी। पुलिस आसपास के सीसीटीवी खगलाने के साथ पूछताछ भी कर रही है। आसपास के वरिष्ठजन भी मौके पर पहुंचे हैं और लोगों को समझाश देकर शांत कर रहे हैं। भारी संख्या में पुलिस बल तैनात कर दिया गया है।

राजकुमार कॉलेज से हटाई गई शिक्षिका

होगी बहाल, हाईकोर्ट का आदेश

बिलासपुर। छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस रमेश सिन्हा और जस्टिस रवींद्र कुमार अग्रवाल की डिवीजन बेंच ने राजकुमार कॉलेज के शिक्षक को 18 साल बाद नौकरी से निकालने के फैसले को अवैध बताया है।कोर्ट ने सिंगल बेंच के फैसले को सही ठहराते हुए शिक्षक को दोबारा नौकरी पर रखने और बकाया वेतन प्रतिलिप्त ब्याज के साथ देने का आदेश दिया है। साथ ही हाईकोर्ट ने रायपुर के राजकुमार कॉलेज प्रबंधन की अपील खारिज कर दी। दरअसल, रायपुर के राजकुमार कॉलेज में सविता मोहंती को 21 जून 1990 को ओडिया भाषा पढ़ाने के लिए सहायक शिक्षिका के पद पर नियुक्त किया गया था। 1994 में उनकी नौकरी पक्की कर दी गई और उन्हें हर साल वेतन बढ़ोतरी भी मिलती रही।करीब 18 साल तक नौकरी करने के बाद 19 जून 2008 को कॉलेज प्रबंधन ने उन्हें अचानक नौकरी से निकाल दिया।

उप मुख्यमंत्री साव ‘खेलो इंडिया संवाद’ कार्यक्रम में हुए शामिल

खेल सुविधाओं के विस्तार, वर्ष 2036 के ओलंपिक के लिए प्रतिभा विकास तथा युवा सशक्तीकरण पर युवाओं ने रखे अपने विचार

रायपुर। उप मुख्यमंत्री तथा खेल एवं युवा कल्याण मंत्री श्री अरुण साव आज रायपुर में राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान में आयोजित ‘खेलो इंडिया संवाद’ कार्यक्रम में शामिल हुए। हॉकी के जादूगर मेजर ध्यानचंद की जयंती राष्ट्रीय खेल दिवस के मौके पर आयोजित देशव्यापी ‘खेलो इंडिया संवाद’ को प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी और केन्द्रीय युवा मामले व खेल मंत्री डॉ. मनसुख मंडाविया ने वर्चुअली संबोधित किया। उन्होंने देश के विभिन्न शहरों से लगभग 1600 स्थानों से जुड़े 8 लाख से अधिक युवाओं को संबोधित किया। देशभर के पथलीट्स और खेल जगत की प्रसिद्ध हस्तियां भी इसमें वर्चुअली शामिल हुए। रायपुर में आयोजित कार्यक्रम में प्रसिद्ध अंतरराष्ट्रीय क्रिकेटर तिलक वर्मा और यूथ-आइकन डॉ. प्रियंका बिस्सा भी मौजूद थीं। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने ‘खेलो इंडिया संवाद’ में देशभर के युवाओं को संबोधित करते हुए कहा कि जब हम खेल

की बात करते हैं, तो ये केवल मेडल जीतने तक सीमित नहीं है। ये विकसित भारत के निर्माण में भारत की खेलशक्ति और भारत की युवाशक्ति को एक साथ जोड़ने का अभियान है। उन्होंने कहा, जो खेले, वो खिले। और खेल में खिलना सिर्फ मैदान पर जीतना नहीं है, खेल में खिलना मतलब व्यक्तित्व का खिलना, परिवार का खिलना और देश का गौरव बढ़ाना।

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने कहा कि भारत में 21वीं सदी का आधुनिक स्पोर्ट्स इकोसिस्टम बनाने के लिए सरकार पूरी तरह प्रतिबद्ध है। आज स्पोर्ट्स और स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटीज से लेकर आधुनिक ट्रेनिंग सेंटर्स तक देश में एक ऐसी व्यवस्था बनाई जा रही है, जिसमें प्रतिभा को पहचानने से लेकर उसे दुनिया के मंच तक पहुंचाने तक हर स्तर पर सहयोग मिले। हम दुनिया के दूसरे देशों के साथ भी स्पोर्ट्स साइंस, प्रशिक्षण, कोचिंग और अनुभव साझा करने के लिए सहयोग बढ़ा रहे हैं।



श्री मोदी ने कहा कि ‘खेलो इंडिया संवाद’ सिर्फ खेल की बात करने का कार्यक्रम नहीं है। ये एक ऐसे संवाद का मंच है जिसका एक-एक विचार देश के स्पोर्ट्स विजन को एक नई दिशा दे सकता है। इसके साथ जो युवा संवाद हो रहा है, वो युवाओं के विचारों और महत्वाकांक्षाओं को देश के सपनों से जोड़ने का बहुत बड़ा माध्यम है। इस कार्यक्रम में स्पोर्ट्स इकोसिस्टम, टैलेंट डेवलपमेंट, गवर्नेंस और विकसित भारत को लेकर युवा क्या सोचते हैं, उनके सुझाव क्या हैं, इन बातों को सुनकर उन्हें नीतियों के निर्माण में शामिल किया जाएगा।

महिला मोर्चा की राष्ट्रीय अध्यक्ष बनने के बाद 29 को पहली बार रायपुर पहुंचेंगी रूपकुमारी

■ स्वागत, तैयारी को लेकर प्रदेश अध्यक्ष ने की वर्चुअल बैठक

रायपुर। भारतीय जनता पार्टी महिला मोर्चा की नवनियुक्त राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं महासमृद लोकसभा सांसद श्रीमती रूपकुमारी चौधरी के राष्ट्रीय अध्यक्ष बनने के बाद पहली बार छत्तीसगढ़ आगमन पर 29 अगस्त को रायपुर में भव्य स्वागत किया जाएगा। स्वागत कार्यक्रम की तैयारियों को लेकर भाजपा महिला मोर्चा द्वारा प्रदेश से लेकर जिला एवं मंडल स्तर तक व्यापक तैयारियां शुरू कर दी गई हैं।

इसी क्रम में तैयारियों को अंतिम रूप देने के लिए भाजपा महिला मोर्चा की प्रदेश अध्यक्ष श्रीमती विभा अवस्थी ने प्रदेश महामंत्री श्रीमती शीतल नायक एवं श्रीमती फुलेश्वरी सिंह सहित जिला और मंडल स्तर की महिला



कार्यकर्ताओं के साथ वर्चुअल बैठक की। बैठक में 29 अगस्त को होने वाले स्वागत कार्यक्रम की तैयारियों, कार्यकर्ताओं की सहभागिता और आयोजन को प्रभावी एवं गरिमापूर्ण बनाने को लेकर चर्चा की गई।

श्रीमती रूपकुमारी चौधरी को 17 अगस्त को भाजपा महिला मोर्चा का राष्ट्रीय अध्यक्ष नियुक्त किया गया था।

बढ़ें। आपके समर्थन और आपके दम पर यह देश विकसित भारत बनेगा। हमारे प्रधानमंत्री आप लोगों को आगे बढ़ाना चाहते हैं, युवाओं की क्षमता का उपयोग कर भारत को विकसित राष्ट्र बनाना चाहते हैं।

मशहूर क्रिकेटर तिलक वर्मा ने कार्यक्रम में युवाओं के सवालों के जवाब देते हुए कहा कि खेल व्यक्ति को सब कुछ सिखाता है। कठिन परिस्थितियों से जुझना, दवाब झेलना, कौशल, टीम भावना और मानसिक स्थिरता जैसे गुण विकसित करने के साथ ही यह सेहत, फिटनेस और पोषण के लिए जागरूक करता है। उन्होंने कहा कि कपिल देव, सचिन तेंदुलकर, विराट कोहली और नीरज चोपड़ा जैसे खिलाड़ियों ने देश के लाखों युवाओं को खेलों से जुड़ने के लिए प्रेरित किया है। यूथ-आइकन डॉ. प्रियंका बिस्सा ने कहा कि युवाओं को सुझाव देने और पहल करने के साथ ही खुद जिम्मेदारी लेने की भी जरूरत है। युवा अपने इनिशिएटिव में ओनरशिप की भावना के साथ काम करें।

आज रक्षाबंधन, बाजार में दिखी रौनक

रायपुर। श्रावण पूर्णिमा को कल शुक्रवार देश भर में भाई बहनों के प्रेम का पवित्र त्यौहार रक्षाबंधन मनाया जायेगा। इसकी तैयारी में हर कोई अपने स्तर पर खरीदारी करने बाजार निकल पड़े हैं। राखियों का मुख्य बाजार वैसे तो गोलबाजार चूड़ी लाइन ही है लेकिन अब तो हर चार कदम पर शहर में राखी की दुकानें सजी हुई हैं। मेवा व मिठाईयों के साथ फल बाजार में जमकर खरीदी हो रही है। भेंट(तोहफा) देने की खास चलन इस त्यौहार में परम्परागत चली आ रही है,इसलिए कपड़े,ज्वेलरी से लेकर अन्य गिफ्ट आयटम की दुकानों में भी भीड़ दिखी। शहर में चारो तरफ जाम की स्थिति बनी हुई है ,यातायात व सुरक्षा व्यवस्था संभालने पुलिस जवान भी मौजूद हैं। लगातार बारिश के बाद मौसम खुला होने से भी लोगों का उत्साह बना हुआ है। लंबे अरसे बाद ये भी रहा है कि कल दिन भर रक्षाबंधन का मुहूर्त है।

रक्षाबंधन पर्व रक्षा के तात्पर्य से बांधने वाला एक ऐसा सूत्र है, जिसमें बहनें अपने भाईयों के माथे पर तिलक लगाकर जीवन के हर संघर्ष तथा मोर्चे पर उनके सफल होने तथा निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर रहने की ईश्वर से प्रार्थना करती हैं तथा उनके सुखद जीवन के लिए मंगलकामना करती हैं। भाई



इस कच्चे धागे के बदले अपनी बहनों की हर प्रकार की विपत्ति से रक्षा करने का वचन देते हैं। वास्तव में भाई-बहन के प्रेम का प्रतीक पर्व रक्षाबंधन स्नेह, सौहार्द एवं सद्भावना का एक ऐसा पर्व है, जो उन्हें अटूट एकता के सूत्र में बांध देता है। श्रावण मास की पूर्णिमा को मनाए जाने वाले रक्षाबंधन पर्व की भारतीय समाज और संस्कृति में कितनी महत्ता है, इसका अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि बहनों के हाथ अपने भाईयों की कलाईयों पर राखियां बांधने के लिए मचल उठते हैं और कलाई पर बांधे जाने वाले मामूली से दिखने वाले इन्हीं कच्चे धागों से पक्के रिश्ते बनते हैं। पवित्रता तथा स्नेह का सूचक यह पर्व भाई-बहन को पवित्र स्नेह के बंधन में बांधने का पवित्र एवं यादगार दिवस है।

बिहान की दीदियों ने उपमुख्यमंत्री शर्मा को राखी बांधकर दी बधाई

रायपुर। कबीरधाम जिले के बिहान स्व-सहायता समूहों से जुड़ी दीदियों और पशुपालकों का गुजरात के बनासकाटा स्थित डेयरी कोऑपरेटिव एवं अमूल डेयरी कोऑपरेटिव का शैक्षणिक भ्रमण उपयोगी और प्रेरणादायी रहा। भ्रमण से वापस लौटने के बाद बिहान समूह की दीदियों ने कवर्धा निवास पहुंचकर उपमुख्यमंत्री एवं कवर्धा विधायक श्री विजय शर्मा से आत्मीय मुलाकात की। इस दौरान दीदियों ने उन्हें रक्षाबंधन का बधाई देते हुए राखी बांधी और गुजरात में मिले अनुभवों तथा सीखी गई नई तकनीकों की जानकारी साझा की। उपमुख्यमंत्री श्री शर्मा ने सभी दीदियों और पशुपालकों का आत्मीय स्वागत करते हुए उनके अनुभव सुने। उन्होंने कहा कि शैक्षणिक भ्रमण का वास्तविक उद्देश्य तभी पूरा होता है, जब वहां से मिली सीख को अपने गांव और जिले में अपनाकर आजीविका के नए अवसर तैयार किए जाएं। उन्होंने दीदियों से बनासकाटा में देखी गई उन्नत डेयरी व्यवस्था, पशुपालन तकनीक, चारा प्रबंधन, दूध संकलन, गुणवत्ता नियंत्रण और सहकारी मॉडल से मिली सीख को स्थानीय स्तर पर लागू करने का आह्वान किया।

उल्लेखनीय है कि उपमुख्यमंत्री श्री विजय शर्मा के विशेष प्रयासों से कबीरधाम जिले के 17 बिहान समूहों की दीदियों और 17 पशुपालकों को गुजरात के बनासकाटा के शैक्षणिक भ्रमण पर भेजा गया था। दल ने



वहां डेयरी कोऑपरेटिव और अमूल डेयरी कोऑपरेटिव की कार्यप्रणाली का प्रत्यक्ष अवलोकन किया। भ्रमण के दौरान प्रतिभागियों ने उन्नत पशुपालन तकनीक, संतुलित आहार एवं चारा विकास, दुग्ध उत्पादन बढ़ाने के उपाय, दुग्ध संकलन एवं

प्रसंस्करण की आधुनिक व्यवस्था, दूध की गुणवत्ता जांच, डेयरी उत्पाद निर्माण और उनके विपणन की पूरी प्रक्रिया को करीब से समझा। इसके साथ ही सहकारी मॉडल के माध्यम से छोटे पशुपालकों को संगठित कर उनकी आय और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने की व्यवस्था की भी जानकारी प्राप्त की। गुजरात से लौटी दीदियों ने बताया कि वहां पशुपालन और डेयरी गतिविधियों को केवल व्यक्तिगत आय का साधन नहीं, बल्कि सामूहिक आर्थिक विकास के मॉडल के रूप में विकसित किया गया है। दुग्ध उत्पादकों को बाजार से जोड़ने, गुणवत्ता बनाए रखने और दूध के बेहतर मूल्य प्राप्त करने की व्यवस्थाओं ने उन्हें विशेष रूप से प्रभावित किया। दीदियों ने कहा कि बनासकाटा में मिली सीख से उन्हें अपने गांवों में पशुपालन और डेयरी गतिविधियों को और बेहतर ढंग से संचालित करने की प्रेरणा मिली है। वे वहां सीखी गई उपयोगी तकनीकों और प्रबंधन पद्धतियों को अन्य ग्रामीण महिलाओं तथा पशुपालकों के साथ साझा कर सामूहिक रूप से आजीविका के नए अवसर विकसित करने का प्रयास करेंगी।

पुरातात्विक धरोहरों को मिलेगा संरक्षण और संवर्धन का नया आधार

■ विशेषज्ञ दल ने धनपुर, बेनीबाई, भस्मासुर एवं शहरखेरवा का किया व्यापक सर्वेक्षण

रायपुर। संस्कृति मंत्री एवं जिले के प्रभारी मंत्री श्री राजेश अग्रवाल के निर्देशानुसार गौरला पेंड्रा मरवाही जिले की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित एवं संवर्धित करने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल शुरू हुई है। पुरातत्व, अभिलेखागार एवं संग्रहालय संचालनालय, महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय रायपुर से पहुंचे चार सदस्यीय विशेषज्ञ दल ने जिले के प्रमुख पुरातात्विक स्थलों का व्यापक मैदानी सर्वेक्षण एवं सूक्ष्म निरीक्षण किया।

उल्लेखनीय है कि मंत्री श्री राजेश अग्रवाल के जिले के प्रवास के दौरान कलेक्टर श्री विजय दयाराम के, ने जिले में बिखरी प्राचीन पुरातात्विक धरोहरों के संरक्षण एवं संवर्धन की आवश्यकता से उन्हें अवगत कराया था। मंत्री श्री राजेश अग्रवाल के निर्देश के बाद संचालनालय पुरातत्व, अभिलेखागार एवं संग्रहालय, महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय, सिविल लाइंस रायपुर से



विशेषज्ञ दल को जिले के पुरातात्विक स्थलों के सर्वेक्षण के लिए भेजा गया।

विशेषज्ञ दल ने धन धनपुर में स्थित प्राचीन मंदिर एवं वहां स्थापित ऐतिहासिक मूर्तियों का सूक्ष्म निरीक्षण किया। विशेषज्ञों ने मंदिर की संरचना, परिसर में मौजूद पुरातात्विक अवशेषों तथा उनके संरक्षण की वर्तमान स्थिति का जायजा लिया।

इसके साथ ही धनपुर-धोबहर धरोहर केंद्र में संग्रहित प्राचीन मूर्तियों एवं अन्य पुरावशेषों का भी गहन अवलोकन किया गया। दल ने इन पुरावशेषों के ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक महत्व का अध्ययन करते हुए उनके संरक्षण, रखरखाव और प्रभावी प्रबंधन की संभावनाओं पर भी विचार किया। प्राचीन मंदिर परिसर का निरीक्षण करते हुए विशेषज्ञों ने संरचना के संरक्षण एवं आवश्यक

सुदृढ़ीकरण की संभावनाओं का भी जायजा लिया। सर्वेक्षण दल ने बेनीबाई एवं भस्मासुर टापू में संरक्षित एवं स्थापित प्राचीन मूर्तियों का भी बारीकी से निरीक्षण किया। विशेषज्ञों ने इन धरोहरों की वर्तमान स्थिति, रखरखाव तथा संरक्षण से जुड़े विभिन्न पहलुओं का अध्ययन किया। मौके पर उपलब्ध पुरातात्विक सामग्री और स्मारकों की स्थिति को देखते हुए आवश्यक संरक्षण उपायों की संभावनाओं का भी आकलन किया गया।

विशेषज्ञ दल ने ऐतिहासिक महत्व के स्थल शहरखेरवा का भी विस्तृत सर्वे किया। यहां उपलब्ध पुरातात्विक अवशेषों एवं संभावित धरोहर स्थलों का निरीक्षण करते हुए क्षेत्र की पुरातात्विक संभावनाओं का अध्ययन किया गया। विशेषज्ञों ने स्थल की विशेषताओं और उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर संरक्षण एवं आगे के अध्ययन की संभावनाओं का जायजा लिया। क्षेत्रीय सर्वेक्षण एवं निरीक्षण पूरा होने के बाद कलेक्टर श्री विजय दयाराम के, ने रायपुर से आए विशेषज्ञ दल के साथ बैठक कर सर्वेक्षण के दौरान सामने आए महत्वपूर्ण तथ्यों की जानकारी ली।

बेखौफ अपराधी, नशे का बढ़ता अवैध कारोबार पुलिस कमिश्नर कौ सौंपा गया ज्ञापन

■ चंगोराभाट में तुरंत पुलिस थाना खोलने की मांग

रायपुर। रायपुर दक्षिण विधानसभा क्षेत्र में लगातार बढ़ती अपराधिक घटनाओं, फलते-फूलते नशे के अवैध कारोबार के विरोध में आज छत्तीसगढ़ प्रदेश कांग्रेस कमेटी के महामंत्री कन्हैया अग्रवाल के नेतृत्व में एक उच्चस्तरीय प्रतिनिधिमंडल ने रायपुर पुलिस कमिश्नर संजीव शुक्ला से मुलाकात कर ज्ञापन सौंपा। प्रतिनिधिमंडल ने चंगोराभाट में हुए हालिया डबल मर्डर के आरोपियों की तत्काल गिरफ्तारी और पूरे क्षेत्र में अवैध गतिविधियों पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने की मांग की। पुलिस कमिश्नर को अग्रवाल ने अवगत कराया कि रायपुर दक्षिण का एक बड़ा हिस्सा अवैध शराब, गांजा, नशीली गोलीयों और सट्टेबाजी का गढ़ बनता जा रहा है। कथित संरक्षण व पुलिस गश्त की कमी के कारण अपराधियों की नई पौध तैयार हो रही है। माफिया नाबालिग बच्चों को मोहरा बनाकर उनसे शराब, गांजे की पुडियां और नशीली दवाइयां बिकवा रहे हैं। कानून की आड़ में छुटने के बाद यही मासूम बच्चे आगे चलकर पेशेवर अपराधी बन रहे हैं। इन मासूमों का भविष्य बचाने के लिए जरूरत के इस काले नेटवर्क पर करारी चोट की सख्त जरूरत है।अग्रवाल ने कहा कि डीडी नगर और टिकरापारा थाना क्षेत्र अत्यंत संवेदनशील हो चुके हैं। बढ़ते अपराधों को देखते हुए उन्होंने चंगोराभाट में अविलंब नया पुलिस थाना खोलने



की मांग दोहराई।

प्रतिनिधिमंडल की मांगों को गंभीरता से सुनते हुए पुलिस कमिश्नर संजीव शुक्ला ने आश्वासन दिया कि चंगोराभाट डबल मर्डर के दोषियों को जल्द सलाखों के पीछे भेजा जाएगा। उन्होंने अगले 15 दिनों के भीतर नशे, जुए और सट्टे के अवैध कारोबार के खिलाफ बड़ी कार्रवाई का भरसा दिया। साथ ही, क्षेत्र में भयमुक्त माहौल बनाने के लिए अतिरिक्त पुलिस बल तैनात करेंगे और रात्रिकालीन पेट्रोलिंग बढ़ाने के निर्देश जारी किए।

प्रतिनिधिमंडल में शहर कांग्रेस महामंत्री सुरेश बाफना, असंगठित क्षेत्र समस्या निवारण प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष मोहम्मद सिद्दीक, शरद गुप्ता, राजेश केडिया, राजेश यदु, राजेश त्रिवेदी, मुकुंद कागदेलवार, देवेन्द्र पवार, शंकर सेन, गोलू, महिला कांग्रेस प्रदेश सचिव श्रीमती भुनेश्वरी डहरिया एवं श्रीमती अनू मरई शामिल थे।

राखी के धागे में विश्वास अपार, बहनों के साथ विष्णु भैया की सरकार

■ राखी से पहले मिली 31वीं किस्त, निशा की जिंदगी में आया खुशियों का त्योहार

रायपुर। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने राखी का रिश्ता, भरोसे का साथ को निभाते हुए महतारी वंदन योजना की 31वीं किस्त रक्षाबंधन से पहले ही प्रदेश की बहनों के खातों में जारी कर दी है। ताकि हर बहन खुशी के साथ अपना त्योहार मना सके। इसी योजना ने ग्राम पखौद की श्रीमती निशा जांगड़े की जिंदगी बदल दी।

पहले निशा मजदूरी करती थीं। अनियमित काम और कम आमदनी के कारण घर चलाना मुश्किल था। फिर महतारी वंदन से हर महीने मिलने वाले 1000 रुपये ने उन्हें हौसला दिया। निशा ने उसी राशि से अपने घर में ही एक छोटा सा फैंसी स्टोर शुरू किया। आज उनका स्टोर अच्छा चल रहा है और वे आत्मनिर्भर बन गई हैं।



राही है और मैं बहुत खुश हूँ और इसी लिए मुख्यमंत्री विष्णु भैया को दिल से धन्यवाद करती हूँ।

निशा जैसी लाखों बहनों के लिए महतारी वंदन आज महतारी वंदन योजना ने छत्तीसगढ़ की महिलाओं को केवल आर्थिक संबल ही नहीं दिया, बल्कि उन्हें आत्मनिर्भर बनाकर परिवार और समाज में एक नई पहचान भी दी है। बहनों की तरक्की, परिवार की शान - विष्णु भैया का यही अभियान आज गांव-गांव में साकार हो रहा है।

जातिवार जनगणना में विवाद के बिंदू तो हैं ही!

अरविंद मोहन

माना जाता है कि 2011 की जनगणना में जाति की सूचना जोड़ने का फैसला जिस राजनीतिक दबाव में लिया गया, उसे बनाने में शरद यादव की भूमिका सबसे बड़ी थी। मंडल की राजनीति से देश में चर्चित हुए शरद यादव को इस मुहिम की हवा कमजोर होते जाने का अंदाजा था और उसके कारणों को दूर करना उनके वश में न था। एक बड़ा कारण तो मंडल का राजनीतिक लाभ गिनती के परिवारों में सिमत जाना था। लेकिन उनको भरोसा था कि एक बार जब जातिवार गिनती के आंकड़े सामने आएंगे तो फिर से जाति का विमर्श राजनीति के केंद्र में आ जाएगा। यह गिनती हुई भी लेकिन ऐसा नतीजा नहीं निकला। उसकी वजह जातिवार आंकड़े कभी जारी ही न हो पाना है। पहले यह लगता रहा कि कांग्रेस की अगुवाई वाली यू.पी.ए. सरकार की इच्छा न थी और वह शुरू से टाल-मटोल कर भी रही थी। उसने मुख्य जनगणना के सवालों में जाति वाली सूचना मांगी भी नहीं थी। यह सर्वे बाद में हुआ। लेकिन बाद में यह जाहिर हुआ कि आंकड़े बहुत ही खराब स्वरूप में आए हैं और अगर उनको जारी किया गया तो झगड़े बढ़ेंगे और जातियों का आपसी संबंध कलह में बदल सकता है। योजना बनाने, संसाधनों के बंटवारे और सत्ता में हिस्सेदारी के बंटवारे के जिस उद्देश्य से इसे कराने का आग्रह किया गया था वह कोई भी लक्ष्य पूरा होता नहीं दिख रहा था। फिर न आंकड़े जारी हुए न कारण बताया गया। मनमोहन सरकार अपनी आदत के अनुसार आलोचना सुनकर भी चुप रही और विपक्ष, जिसमें भाजपा भी शामिल थी, इस चूक या गलती का ठीकरा सरकार के सिर फोड़कर अपनी राजनीति चमकाता रहा। इसमें मंडल वाला खेमा तो निरंतर कमजोर पड़ता गया और 2 राज्यों तथा परिवारों की राजनीति तक सिमत गया। लेकिन अब अचानक पाला पलटा क्योंकि विपक्ष के नेता राहुल गांधी जातिवार जनगणना के पक्ष में हो गए। उन्होंने कांग्रेसी सरकारों द्वारा लगाई गई देरी को गलत कहना भी शुरू किया। अब तो उन्होंने पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरेगे के साथ इस मामले में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को चिट्ठी भी लिखी है। यह शुरूआत तब हुई, जब बिहार सरकार ने अपने यहां जातिवार जनगणना का फैसला किया और कांग्रेस उस सरकार में शामिल थी। सहमति तो बिहार भाजपा ने भी दी थी लेकिन केंद्र सरकार ने इसे रोकने के लिए अदालत का दरवाजा खटखटाने से लेकर हर उपाय किए। लेकिन जब राहुल गांधी और उनके पीछे पूरी मंडलवादी धारा ने जातिवार जनगणना को एक बड़ा राजनीतिक मुद्दा बना दिया, तो भाजपा को भी पक्ष में दिखने की मजबूरी हो गई। राहुल को अब यह अपना एक नया हथियार लगाने लगा। लेकिन भाजपा जातिवार जनगणना तो क्या, सामान्य जनगणना कराने से भी हिचकती रही है। इसके क्या कारण हो सकते हैं, इसका अनुमान भर लगाया जा सकता है लेकिन उसकी चर्चा यहां करने का मतलब नहीं है। मतदाता सूची के पुनरीक्षण और नागरिकता के सवालों पर उसका रवैया भी समझ में नहीं आता। संयोग से 2020 के आसपास फैले कोविड ने उसे एक बहाना भी दे दिया। कई मामलों में इसके पीछे संघ को माना जाता रहा है। वैसे संघ आरक्षण के पक्ष में बयान देता रहा है और चुनावी मजबूरियों के चलते पिछड़ों को स्थान देना शुरू किया। नरेंद्र मोदी का पिछड़ा होना सिर्फ वोट की राजनीति के लिए सुविधा बढ़ाने वाला साबित हुआ है, नजरिया बदलने वाला नहीं। पर जब राहुल की अगुवाई में लगभग पूरे विपक्ष और भाजपा के अंदर के पिछड़े तबके ने दबाव बनाया तो उसने देर से शुरू हुई जनगणना के साथ जातिवार गणना का प्रस्ताव भी स्वीकार कर लिया था।

ज्ञान/मीमांसा

जयशंकर और डोभाल की रूस-चीन यात्रा के कूटनीतिक संदेश

कमलेश पांडे

महान भारतीय कूटनीतिज्ञ आचार्य चाणक्य ने कहा था कि हर मित्रता के पीछे कुछ स्वार्थ होता है। स्वार्थ के बिना कोई मित्रता नहीं हो सकती। यह एक कड़वा सच है। अंतरराष्ट्रीय कूटनीति पर उनकी बात दू-ब-दू लागू होती है। उनकी इसी बात से प्रेरणा लेते हुए समकालीन भारतीय नेतृत्व यानी भारत दुनिया की किसी एक शक्ति-धुरी में बंधने के बजाय रूस, चीन और पश्चिम—तीनों के साथ अपने हितों के अनुसार समानांतर कूटनीति चला रहा है। स्वाभाविक है कि कूटनीतिक संतुलन में बाधाएं आएंगी ही और सम्बन्धों में थोड़ी सी गफलत भारत को बहुत क्षति पहुंचा सकती है। इसलिए जब जब ऐसी सम्भावनाएं बलवती दिखाई देती हैं, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के भरोसेमंद सिपहसालार सक्रिय हो जाते हैं।

वाकई, यह संयोग नहीं है कि विदेश मंत्री एस. जयशंकर रूस में और राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजित डोभाल चीन में लगभग एक ही समय में अपने अपने होमवर्क को दुरुस्त करने को लेकर सक्रिय हैं। गत 23-24 अगस्त को जयशंकर ने माँस्को में भारत-रूस सहयोग पर बातचीत की, जबकि डोभाल 24-25 अगस्त को बीजिंग में चीन के विदेश मंत्री वांग यी के साथ भारत-चीन सीमा विवाद पर 25वें विशेष प्रतिनिधि दौर में हिस्सा लिए। इसके गहरे कूटनीतिक निहितार्थ हैं। अंतर्राष्ट्रीय कूटनीतिक विप्लवशंकों की मानें तो एक ही समय में भारत की तरफ से दो महत्वपूर्ण कूटनीतिक यात्राएँ चल रही है, जिसके दृष्टिगत विदेश मंत्री एस. जयशंकर रूस में हैं, जबकि द्ध्र अजीत डोभाल चीन में रणनीतिक बातचीत कर रहे हैं। दरअसल, ये यात्राएँ भारत की उस कुशल विदेश नीति का हिस्सा है, जिसमें सर्वाधिक मजबूत दुश्मन देश चीन के साथ तनाव कम करने का प्रयास तो शामिल है ही, लगे हाथ अपने पुराने वफादार मित्र रूस संग पुराने संबंधों को बदली हुई परिस्थितियों में और मजबूती देने की भगीरथ कोशिश चल रही है।

इसी के तरहत राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल सीमा विवाद को लेकर होने वाली बातचीत में हिस्सा लिए। इस दौरान द्विपक्षीय संबंधों से जुड़े कई अहम मुद्दों पर चर्चा हुई। खासकर अक्टूबर 2024 में रूस के कजान में हुए ब्रिक्स सम्मेलन के दौरान पीएम नरेंद्र मोदी और चीनी राष्ट्रपति शी चिनफिंग की



मुलाकात ने द्विपक्षीय संबंधों में आए तनाव को जो कम करने की शुरूआत की थी, उसके बाद से ही दोनों देशों के बीच संवाद बढ़ा है जबकि यह गलवान झड़प के बाद थम सा गया था। हालांकि सुधार के संकेतों के बावजूद यह नहीं कह सकते कि भरोसा पूरी तरह लौट आया है, क्योंकि हाल में अरुणाचल प्रदेश को लेकर पेइचिंग द्वारा अपनाया गया रुख इसका सच्चा सबूत है। यही वजह है कि चीन और रूस दोनों से पुनः बातचीत की जरूरत आन पड़ी है। वहीं ब्रिक्स की मेजबानी से पहले उपजे अरुणाचल गतिरोध के पीछे भी चीनी चाल को समझने की जरूरत है। यह ठीक है कि दोनों ही देशों का हित सीमा पर शांति और स्थिरता में निहित है। उसके मद्देनजर यह यात्रा इसलिए भी महत्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि सितंबर में भारत को ब्रिक्स सम्मेलन की मेजबानी करनी है। इसमें शी चिनफिंग के भी आने की चर्चा है, लेकिन उन्होंने कन्ग्री काटने के बहाने ढूँढ लिए हैं। उल्लेखनीय है कि पिछले साल अगस्त के आखिर में जब पीएम मोदी एससीओ समिट के लिए चीन के तियानजिन गए थे, तो वहां शी के साथ मुलाकात ने द्विपक्षीय संबंधों को गति देने में मदद की थी। तब दोनों ने दोहराया था कि भारत और चीन विकास के साझेदार है और आपसी मतभेद विवाद में नहीं बदलने चाहिए। यह बात आज भी उतना ही सच है।

उधर, भारत पर बढ़ते अमेरिकी दबाव के बीच जयशंकर की माँस्को यात्रा की अहमियत भी मौजूदा भू-राजनीति को देखते हुए अहम हो जाती है, क्योंकि गत सोमवार को उन्होंने रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन से मुलाकात की। फिर वे अपने समकक्ष से मिले। इस दौरान बातचीत के अजेंडे में व्यापार और ऊर्जा से लेकर वैश्विक मुद्दे तक शामिल रहे हैं, क्योंकि अंतर्राष्ट्रीय कसौटी पर ये खरे उतरे हुए द्विपक्षीय सम्बन्ध हैं। यद्यपि नई दिल्ली-माँस्को संबंधों को लगातार अमेरिकी दबाव का सामना करना पड़ा है। खासकर यूक्रेन युद्ध और पश्चिम एशिया में ईरान जिस तरह उलझा पड़ा है, आगे कूटनीतिक

चुनौती और बड़ी हो सकती है।

याद रहे कि जब बेहद मुश्किल हालात में भी तियानजिन से मोदी, पुतिन और चिनफिंग की तस्वीर आई तो उसने पूरी दुनिया का ध्यान खींचा था, खासकर अमेरिका-यूरोप का। उस समय ट्रंप प्रशासन ने टैरिफ वॉर छेड़ रखी थी। जबकि आज वैश्विक परिस्थितियां तब से ज्यादा जटिल है। दुनिया का थानेदार अमेरिका अब भी टैरिफ को हथियार बनाने की कोशिश कर रहा है और ऊर्जा, संकट बरकरार है। लिहाजा भारत को संतुलित नीति अपनाने की जरूरत है। मेरे विचार में विदेश मंत्री और राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार की कूटनीतिक यात्रा का सबसे बड़ा संदेश यह है कि—

पहला, रूस में जयशंकर: पुरानी दोस्ती को नए आर्थिक आधार देना पसंद किए हैं। जयशंकर की माँस्को यात्रा सिर्फ रक्षा संबंधों की औपचारिक समीक्षा नहीं थी, बल्कि व्यापार, ऊर्जा, उर्वरक, परमाणु ऊर्जा, विज्ञान-तकनीक और अन्य क्षेत्रों में सहयोग को आगे बढ़ाना इसका महत्वपूर्ण हिस्सा रहा। इसका अर्थ है कि भारत रूस को केवल हथियारों के पुराने आपूर्तिकर्ता के रूप में नहीं, बल्कि ऊर्जा, परमाणु, तकनीक और व्यापार का दीर्घकालीन साझेदार बनाना चाहता है। और यह विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि रूस पर पश्चिमी दबाव के बावजूद भारत अपने रणनीतिक स्वायत्तता के सिद्धांत को छोड़ना नहीं चाहता।

दूसरा, चीन में डोभाल सीमा विवाद को सुरक्षा चैनल में संभालना चाहते हैं। डोभाल का बीजिंग जाना बिल्कुल अलग प्रकृति की कूटनीति है। वे वांग यी के साथ सीमा प्रश्न पर विशेष प्रतिनिधि वार्ता कर रहे हैं। 2020 के गलवान संकट के बाद भारत-चीन संबंधों में सबसे बड़ी समस्या यही रही है कि सीमा पर शांति के बिना सामान्य संबंध कितने आगे बढ़ सकते हैं। भारत का संदेश पहले ही स्पष्ट किया गया है—सीमा पर शांति और स्थिरता अच्छे द्विपक्षीय संबंधों की बुनियादी शर्त है। इसलिए डोभाल की बातचीत का वास्तविक परीक्षण यह होगा कि क्या एलएसी पर स्थायी सैन्य स्थिरता, गश्त व्यवस्था और विश्वास बहाली की दिशा में कोई ठोस प्रगति होती है।

तीसरा, दोनों यात्राओं को साथ रखकर देखें तो असली रणनीति दिखाई देती है। वह यह कि यहाँ भारत की कूटनीति का एक दिलचस्प ढांचा दिखाई देता है: माँस्को — सामरिक/ऊर्जा/

रक्षाबंधन



रक्षाबंधन पर भद्रा को लेकर भी विशेष सावधानी बरती जाती है, क्योंकि भद्रा काल में मांगलिक और शुभ कार्य करने की मनाही मानी जाती है। इस साल 27 अगस्त को भद्रा का प्रभाव सुबह 9 बजकर 08 मिनट से लेकर रात 9 बजकर 32 मिनट तक रहेगा। यानी 27 अगस्त रात तक भद्रा समाप्त हो जाएगी। ऐसे में 28 अगस्त को राखी बांधने में भद्रा की बाधा नहीं रहेगी।

द्रिक पंचांग के मुताबिक, 28 अगस्त

की राखी बांधने का पहला मुहूर्त सुबह 6 बजकर 23 मिनट से लेकर सुबह 9 बजकर 48 मिनट तक रहेगा। वहीं, सुबह 10 बजकर 12 मिनट से लेकर दोपहर 12 बजकर 20 मिनट तक राहुकाल रहेगा, इसलिए इस दौरान राखी बांधने से बचने की सलाह दी जा रही है। अगर सुबह राखी बांधना संभव नहीं है तो शाम के समय भी शुभ मुहूर्त में भाई की कलाई पर रक्षा सूत्र बांधा जा सकता है।

अभिजित मुहूर्त: दोपहर 12:04 बजे से 12:53 बजे तक।

शुभ चौघड़िया: दोपहर 12:28 बजे से 2:03 बजे तक।

अपराह्न काल: दोपहर 1:44 बजे से शाम 4:16 बजे तक।

चर चौघड़िया: शाम 5:13 बजे से 6:48 बजे तक।

इस बार रक्षाबंधन को ज्योतिषीय दृष्टि

से भी खास बताया जा रहा है। जानकारों के मुताबिक रक्षाबंधन के दिन करीब 11 शुभ योगों का संयोग बन रहा है। शतभिषा नक्षत्र के साथ अतिगंड, शोभन, शिव और विजय जैसे योग बनने की बात कही जा रही है। इसके अलावा चंद्रादि, बुधादित्य, विपत्त, विपरीत राजयोग, धन, उभयचरी, शकट और सुनफा योग का भी संयोग बताया जा रहा है। ज्योतिषीय मान्यताओं के अनुसार ऐसे शुभ योगों में पूजा-पाठ, दान और भाई की कलाई पर रक्षा सूत्र बांधने जैसे धार्मिक कार्यों को विशेष फलदायी माना जाता है। रक्षाबंधन के दिन ग्रहों की स्थिति भी महत्वपूर्ण बताई जा रही है। सूर्य सिंह राशि में रहेंगे, जबकि गुरु कर्क राशि में स्थित होंगे। ज्योतिष में सूर्य को आत्मबल, प्रतिष्ठा और ऊर्जा का कारक माना जाता है, वहीं गुरु को ज्ञान, शिक्षा, बुद्धि और समृद्धि से जोड़ा जाता है।

आज का इतिहास

1521 तुर्की के सुल्तान सुलेमान प्रथम से सैनिकों ने बेलग्रेड पर कब्ज़ा किया।

1600 मुग़लों ने अहमदनगर पर कब्ज़ा किया।

1845 प्रसिद्ध पत्रिका साइटैफिक अमरीकन का पहला संस्करण छपा।

1858 उंगलियों के निशान को पहचान बनाने वाले ब्रिटिश विलियम जेम्स हर्शेल का जन्म हुआ।

1904 कलकत्ता से बैरकपुर तक प्रथम कार रैली का आयोजन

1914 प्रथम विश्व युद्ध की शुरुआत हुई।

1916 प्रथम विश्वयुद्ध में इटली ने जर्मनी के खिलाफ युद्ध की घोषणा की।

1928 विलायत खूँ – भारत के प्रसिद्ध सितार वादक का जन्म हुआ।

1956 इंग्लैंड ने ऑस्ट्रेलिया को हटाकर एशेज पर कब्जा जमाया।

1972 साधारण बीमा कारोबार राष्टी यकरण बिल पारित किया गया

1984 सोवियत संघ ने भूमिगत परमाणु परीक्षण किया।

1986 भाग्यश्री साठे शतरंज में ग्रैंडमास्टर बनने वाली पहली महिला बनी।

1990 ईराक ने कुवैत को अपना 19वाँ प्रान्त घोषित किया।

1996 इंग्लैंड के प्रिंस चार्ल्स और उनकी पत्नी डायना ने औपचारिक तौर पर तलाक लिया।

1999 मेजर समीर कोतवाल आसाम में उग्रवादियों के एक गुट के साथ लड़ाई में शहीद हो गये।

2000 ताइवान के राष्ट्रपति चुने शुई बियान द्वारा चीन के साथ एकीकरण के विकल्प को स्वीकार करने का संकेत, संयुक्त राष्ट्र में सहस्त्राब्दि विश्व धार्मिक शिखर सम्मेलन शुरू।

2001 भारत-पाक सीमा पर गोलीबारी, पाकिस्तान के 8 सैनिक मारे।

2006 दुनिया की सबसे बड़ी महिला मारिया एस्टर डी. कापोविला का इक्वेडोर में निधन।

2008 भारतीय रिजर्व बैंक ने 1999 और 2000 के सभी नोटो को प्रचलन से हटाने का निणय किया।

2008 प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने बिहार में आए बाढ़ को राष्टीय आपदा घोषित किया।

2008 अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध मैगजीन फोर्ब्स ने उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्यामवती को दुनिया की 100 सबसे शक्तिशाली महिलाओं में शामिल किया।

2013 गुजरात के वडोदरा शहर में तीन मंजिला इमारत ढहने से 11 लोगों की मौत।

2017 पी.वी. सिंधु ने बैडमिंटन विश्व चैंपियनशिप में रजत जीता।

2018 भारत के मंजीत सिंह ने जकार्ता एशियाई खेलों की पुरुष 800 मीटर दौड़ में स्वर्ण पदक जीता।



पुराण दिग्दर्शन

विश्व विद्या-निरुपणाध्यायः (दशम अध्याय)

(गतांक्त से आगे...)

इनेतिने पद्यों में अलंकार का ऐसा सर्वांगपूर्ण वर्णन करना श्री वेदव्यास जी का ही काम है। इस समय साहित्य शास्त्र में काव्यप्रकाश का स्थान बहुत उंचा है, परन्तु नाटकादि वर्णन का अभाव उसमें वेतरह खटकता है। परन्तु अग्निपुराण में प्रायः सभी साहित्यिक विषयों का समावेश रहने के कारण वह उक्त दोष से सर्वथा मुक्त है, अतः हम उसे ही सर्वतोमुख अलङ्कार शास्त्र कह सकते हैं। इनके अतिरिक्त अग्निपुराण के साहित्य में हमें कई विशेषताएँ भी दीख पड़ती हैं। उदाहरण के लिए हम कतिपय ऐसे अलंकारों के नाम पेश करते हैं, जी आधुनिक ग्रन्थोंमें नहीं मिलते। यथा –

छायामुद्रा तथोक्तिश्च युक्तिगुंफनया सह।

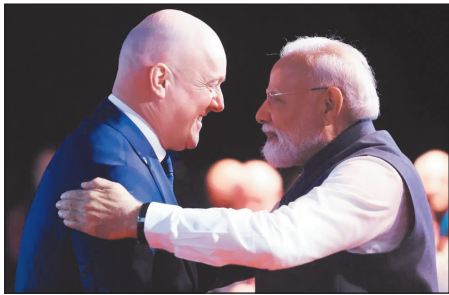
वाकीवाक्यमनुप्रासशक्तं दुष्करमेव च॥

ज्ञेया नवालंकृतयः शब्दानामित्यसंकरात्॥

(अग्नि पु० 344 116–20)

इन नौ शब्दालंकारों में से अनुप्रास को छोड़कर शेष अलङ्कार इस समय पुराण बर्णित नामों से व्यवहृत नहीं होते । श्रीमद्भगवत महापुराण दशम स्कन्ध का जयति तेऽधिकम् आदि गोपीगीत नामक पूरा एक अध्याय विलक्षण शब्दालङ्कारों से परिपूर्ण है। साम्प्रतिक अलङ्कार-ग्रन्थों में ढूँढने पर भी उक्त अलङ्कार का नाम नहीं मिलता-जैसे कि इस अध्याय के प्रत्येक श्लोक का द्वितीय अक्षर समान है। जयति ते आदि में द्वितीय अक्षर यकार है तो यह चारों ही पादों में यकार ही है। इसी प्रकार न खलुगोपिकानन्दनो भवान् के चारों ही पादों में द्वितीय अक्षर ख कार है। इसी प्रकार अन्यान्य पद्यों में यही बात पाई जाती है। निःसन्देह यह अलौकिक अलङ्कार अन्यत्र उपलब्ध नहीं होता। यदि साहित्यप्रेमी अग्निपुराण का (अध्याय 338 से 344 तक) पारायण करें तो उन्हें और भी अनेक विशेषताएँ मिल सकती हैं, जो विस्तारभयात् यहां प्रकट नहीं की जा सकती।

क्रमशः ...



प्रतिनिधिमंडल ने जॉइंट ट्रेनिंग एक्सरसाइज, क्रॉस–सर्विस पर्सनल एक्सचेंज और मैरीटाइम, एयर और लैंड युनिट्स में डिफेंस स्टाफ कॉलेज पार्टनरशिप के जरिए सैन्य-से-सैन्य जुड़ाव को बढ़ाने के विकल्प पर विस्तार से समीक्षा की। भारतीय प्रतिनिधिमंडल ने कार्वाई योग्य रणनीतिक अभिसरण को और मजबूत करने के लिए न्यूजीलैंड डिफेंस फोर्स और रक्षा मंत्रालय के मुख्य नेताओं के साथ उच्च स्तरीय बैठक भी की।

मंत्रालय ने आगे कहा कि, प्रतिनिधिमंडल ने रक्षा बल के उप प्रमुख, कमांडर संयुक्त बल न्यूजीलैंड और डिफ्टी सेक्रेटरी क्षमता विलरण के साथ फायदेमंद बातचीत की। ये मुलाकातें संयुक्त पूंजी खरीद अंतर्दृष्टि को तेज करने, परिवारान ढांचा का मेल करने और आने वाले कामों के लिए बिना रुकावट समन्वय पक्का करने पर फोकस थीं। बयान में आगे कहा गया कि नियमित उच्च-स्तरीय बैठक मंत्री स्तरीय आदान-प्रदान के जरिए गति को तेज करने के आपसी समझौते के साथ खत्म हुई। दोनों देशों ने भरोसा जताया कि इस बातचीत के दौरान उठाए गए कदम रक्षा और सुरक्षा समन्वय को काफी बढ़ाएंगे, और इसे उनके द्विपक्षीय रिश्तों का एक अहम स्तंभ बनाएंगे। इस साझेदारी का महत्व दिपक्षीय रक्षा संबंधों से कहीं आगे तक है। भारत और न्यूजीलैंड दोनों का सोधा दिलचस्पी एक मुक्त, खुला, समावेशी, शांतिपूर्ण और नियमों पर आधारित भारत-प्रशांत में है, जहां समुद्री रास्ते सुरक्षित रहें, अंतरराष्ट्रीय कानून का सम्मान किया जाए और देश

ब्रिक्स सम्मेलन : एक जगह जब जमा होंगे मोदी–जिनपिंग और पुतिन

अभिनय आकाश

हम भी दरिया हैं हमें अपना हुनूर मालूम है, जिस तरफ भी चल पड़ेंगे रास्ता हो जाएगा। भारत की तरफ से अमेरिका को पैगाम साफ साफ दिया जा रहा है। सवाल है कि अमेरिका बार बार अमेरिका के हुनर का इम्तिहान क्यों ले रहा है? इम्तिहान कुछ ऐसा कि जो जवाब मिलेगा वो पचा नहीं पाएंगे।डोनाल्ड ट्रंप अब भारत पर टैरिफ लगा रहे हैं। रूस से तेल क्यों लेते हो ये कहकर आंखें दिखा रहे हैं। नैतिकता का पाठ पढ़ा रहे हैं। एक बार चाणक्य ने विदेशी संबंधों को लेकर कहा था कि किसी भी देश को ऐसी मित्रता या गठबंधन तुरंत समाप्त कर देना चाहिए। जिससे भविष्य में उसे नुकसान हो। अमेरिका से भारत की मित्रता या गठबंधन खत्म तो नहीं हो सकता। लेकिन अमेरिका को भारत ने कुछ चीजें स्पष्ट कर दी है। सबसे पहले तो हमारे लिए हमारा राष्ट्रहित सर्वोपरि है और भारत किसी भी दबाव के आगे झुकने वाला देश नहीं है। अगले महीने नई दिल्ली में होने वाले ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन, चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग और ईरान के राष्ट्रपति मसूद पेजेशकियन समेत दुनिया के कई बड़े

नेता शामिल हो सकते हैं। भारत 5 साल बाद इस सम्मेलन की मेजबानी कर रहा है। यह बैठक ऐसे समय में हो रही है जब मिडिल ईस्ट (पश्चिम एशिया) और यूरोप में युद्ध के कारण दुनिया भर में तनाव का माहौल है। ब्रिक्स संगठन अब एशिया, अफ्रीका, मिडिल ईस्ट और लैटिन अमेरिका तक फैल चुका है, और इस सम्मेलन में समूह के कई देशों के शीर्ष नेताओं के जुटने की उम्मीद है।

सम्मेलन में शामिल होने वाले संभावित प्रमुख नेता–

राष्ट्रपति– दक्षिण अफ्रीका: सिरिल रामफोसा, मिस्र: अब्देल फतह अल–सीसी, बेलारूस: अलेक्सान्द्र लुकाशेंको, कजाकिस्तान: कासिम–जोमार्ट टोकायेव, इंडोनेशिया: प्रबोवो सुबियांतो, क्यूबा: मिगुएल डियाज–कैनेल, नाइजीरिया: बोला टीनुबू, उज्बेकिस्तान: शौकत मिर्जियोयेव,

प्रधानमंत्री– मलेशिया: अनवर इब्राहिम, थाईलैंड: अनुतिन चार्नवि राकुल, इथियोपिया: अबी अहमद, अन्य देशों के प्रतिनिधि, ब्राजील: घरेलू व्यस्तताओं के कारण राष्ट्रपति लुइज़ इनासियो लुला डा सिल्वा के शामिल होने की उम्मीद नहीं है; उनकी जगह विदेश



मंत्री मौरो विएरा देश का प्रतिनिधित्व कर सकते हैं। युगांडा: उपराष्ट्रपति जेसिका अलुपो शामिल हो सकती हैं। वियतनाम: प्रधानमंत्री ले मिन्ह हुंग प्रतिनिधित्व कर सकते हैं। संयुक्त अरब अमीरात (यूएई): राष्ट्रपति शेख मोहम्मद बिन जायद अल नाहयान की जगह अबू धाबी के क्राउन प्रिंस शेख खालिद बिन मोहम्मद बिन जायद अल नाहयान के आने की संभावना है।

कागज पर तो एजेंडा व्यापार, विकास के लिए फंडिंग और ग्लोबल संस्थाओं में सुधार पर केंद्रित है, लेकिन बंद दरवाजों के पीछे होने वाली बैठकों में मिडिल ईस्ट के टकराव और ईरान व यूएई के बीच मतभेदों का मुद्दा हावी

रहने की संभावना है। उम्मीद है कि ईरान समिट के चोपणा–पत्र में हालिया टकराव, हमलों और प्रतिबंधों पर अपना पक्ष रखने के लिए जोर देगा, जिससे बातचीत काफ़ी मुश्किल हो सकती है। ब्रिक्स आम सहमति के आधार पर काम करता है, जिसका मतलब है कि कोई एक प्रतिनिधिमंडल भी किसी विवादित पैराग्राफ़ पर सहमति को रोक सकता है। पश्चिम

एशिया से जुड़े शब्दों को लेकर ही दबाव है। हर किसी की अपनी रेड लाइन है। व्लादिमीर पुतिन और शी जिनपिंग की मौजूदगी भारत की कूटनीतिक संतुलन बनाने की कोशिशों में एक नया पहलू जोड़ेगी। न्यूज एजेंसी रॉयटर्स ने अधिकारियों के हवाले से बताया है कि शी के साथ लगभग 400 अधिकारियों का एक बड़ा दल शिखर सम्मेलन में शामिल हो सकता है। यह सात वर्षों में उनकी पहली यात्रा होगी और दोनों प्रतिद्वंद्वियों के बीच रिश्तों में सुधार का एक नया संकेत होगा। चीनी नेता की मौजूदगी पर ब्रिक्स के एजेंडे से ज्यादा इस बात पर नज़र

रहेगी कि यह 2020 में सीमा पर हुई घातक झड़पों के बाद बीजिंग और नई दिल्ली के रिश्तों को स्थिर करने की कोशिशों के बारे में क्या संकेत देता है। रूसी राष्ट्रपति पुतिन भी एक क्षेत्रीय मंच पर भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात करना चाहते हैं और साथ ही दोनों देशों के बीच व्यापार सहयोग बढ़ाने पर जोर दे रहे हैं। क्रेमलिन में भारत के विदेश मंत्री एस जयशंकर के साथ हुई बैठक में, पुतिन ने पिछले साल आई गिरावट के बाद रूस और भारत के बीच व्यापार में हुई रिकवरी का जिक्र किया। इसके बाद उन्होंने विदेश मंत्री से कहा। पश्चिमी देशों के दबाव के बावजूद, भारत रूस के साथ रक्षा और ऊर्जा के क्षेत्र में करीबी संबंध बनाए हुए है। वहीं, %लाइन ऑफ़ एक्जुअल कंट्रोल% पर सालों तक चले सैन्य तनाव के बाद चीन के साथ रिश्ते बेहतर हुए हैं, हालांकि दोनों देशों के बीच रणनीतिक प्रतिद्वंद्विता अभी भी बनी हुई है।

कुछ विशेषज्ञों का मानना है कि ट्रंप के बयानों ने भारत को ठेस पहुंचाई है और इससे भारत को अपनी रणनीति पर दोबारा सोचने पर मजबूर कर सकता है। अगर ऐसा होता है, तो इसका मतलब भारत की विदेश नीति में बड़ा

बदलाव होगा। पूर्व विदेश मंत्री हेनरी किंसिंजर ने एक बार कहा था–अमेरिका से दुश्मनी भारी होती है और दोस्ती जानलेवा। भारत के लिए चीन से संबंधों में सुधार अच्छा कदम है। विश्व के मानचित्र पर एक नजर डालें तो पता चल जाएगा कि रूस, चीन और भारत कितने बड़े देश हैं। ये अगर एक साथ हों, तो एक नए विश्व की संरचना संभव है। ज्यादातर विदेशी नीति जानकार मानते हैं कि भारत–अमेरिका के रिश्ते सिर्फ ट्रंप के कार्यकाल तक सीमित नहीं हैं। ये रिश्ते सालों में बने हैं और दोनों देशों के बीच गहरी रणनीतिक साझेदारी है। चीन के साथ अच्छे संबंध ठीक हैं, लेकिन चीन भारत का मुख्य रणनीतिक प्रतिद्वंद्वी बना रहेगा। हालांकि ट्रम्प की टेरिफ नीति और भारत, रूस, और चीन के संभावित गठजोड़ का वैश्विक शक्ति संतुलन पर गहरा प्रभाव पड़ सकता है। यदि यह गठजोड़ सफल होता है, तो यह वैश्विक व्यापार और भू–राजनीति में अमेरिका के एकध्रुवीय वर्चस्व को चुनौती दे सकता है। ब्रिक्स और एससीओ जैसे मंच इस गठजोड़ को और मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। भारत के लिए यह एक अवसर है कि वह वैश्विक मंच पर अपनी स्थिति को मजबूत करे।

जाति और वर्ग की खाई पाटने के लिए बदलाव की शुरुआत कहाँ से हो?

विश्वनाथ सचदेव

बरसों पुरानी बात है। परिगणित जाति की एक महिला सरपंच एक वरिष्ठ सरकारी अधिकारी से मिलने गई थीं। काम हो जाने के बाद जब वह सरपंच कार्यालय से चली गई तो उस अधिकारी ने वह कुर्सी धुलवाकर ‘पवित्र’ करवाई थी जिस पर परिगणित जाति की महिला बैठी थी! यह समाचार तब कुछ अखबारों में छपा था। कुछ चर्चा भी हुई थी इसे लेकर। पर जल्द ही यह घटना लोग भूल गए। अपने ढंग की अकेली घटना नहीं थी यह। तथाकथित छोटी–जाति वालों के साथ ऐसा घटना रहता है।

कभी घोड़े पर चढ़कर बारात ले जाने वाला कथित छोटा जाति वाला कथित उच्च जाति के गुप्से का शिकार बनता है तो कभी किसी स्कूल में छोटी जाति के बच्चों को पृथक बिठाने का समाचार मिलता है। पर हमारी सामाजिक स्मृति में ऐसी घटनाएँ बहुदु दिन तक नहीं रहतीं। भूल जाते हैं हम कि हमारे तथाकथित समतामूलक समाज में ऐसा भी कुछ घटा है या घट रहा है। नहीं भुलाया जाना चाहिए ऐसी बातों की। इन्हें याद रखना जरूरी है ताकि हमें यह अहसास होता रहे कि प्रगति के सारे दावों के बावजूद हमारी सोच कितनी पिछड़ी हुई है।

हाल ही में उत्तराखंड के हल्द्वानी में ऐसी ही एक शर्मनाक घटना घटी थी, जिसे याद रखा जाना जरूरी है। राज्यसभा में विपक्ष के नेता और कांग्रेस पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे के साथ घटी इस घटना का विवरण उन्होंने स्वयं राज्यसभा में दिया था। यह अच्छी बात है कि राज्यसभा में सत्ताकूट पक्ष के नेता ने इस प्रकरण की जांच करने का आश्वासन



देकर खड़गे जी की पीड़ा पर कुछ मरहम लगाने का काम किया। पर यह पीड़ा सिर्फ खड़गे जी की नहीं है, सिर्फ उनकी ही पीड़ा होनी भी नहीं चाहिए। इस पीड़ा का अहसास उस हर भारतीय को होना चाहिए जो समता और न्याय के आदर्शों में विश्वास करता है, जो यह मानता है कि हमारा संविधान देश के हर नागरिक को समानता का अधिकार देता है।

राज्यसभा में विपक्ष के नेता ने हल्द्वानी में घटी इस शर्मनाक घटना का विवरण देते हुए बताया कि यहां जिस मैदान में उनका भाषण हुआ, उस जगह और उस मंच को बाद में गंगाजल से धोकर शुद्ध किया गया था। शुद्धिकरण का आयोजन करने वाले कथित उच्च वर्ण वालों का कहना था कि जहां यह सभा हुई थी, वहां रामलीला का आयोजन होता है, इसलिए हवन करके जगह को शुद्ध किया गया!

इस शर्मनाक घटना की जांच कहां तक पहुंची है, पता नहीं। अक्सर ऐसी घटनाओं को दुर्भाग्यपूर्ण बताकर भुला दिया जाता है। पर होना यह चाहिए कि फिर जब कुछ ऐसा घटे तो हम यह अनुभव करें कि स्वतंत्रता के अस्सी साल बाद भी हम सामाजिक ऊंच–नीच के अभिशाप को ढो रहे हैं।

पूनम आई. कौशिश

किसी गीत में रखा ही क्या है? मधुर है, लायतामक है और लोकप्रिय है। लेकिन यदि वह ‘वंदे मातरम्’ हो तो बात इतनी सरल नहीं रह जाती। यह गीत अब राष्ट्रीय गीत कम और भाजपा–विपक्ष की राजनीतिक नोकझोंक में एक राजनीतिक हथियार अधिक बन गया है। भाजपा कांग्रेस पर आरोप लगा रही है कि उसने इसके गायन को केवल पहले 2 अंतरों तक सीमित रखकर इसका अपमान किया है। साथ ही कांग्रेस को उसकी धुर–विरोधी, ‘राष्ट्र–विरोधी’, ‘नई मुस्लिम लीग’ और तुष्टीकरण की राजनीति का अनुयायी बताया जा रहा है।

कांग्रेस का कहना है कि उसका रुख इतिहास पर आधारित है। 1937 में सार्वजनिक समारोहों में केवल पहले 2 अंतरों के गायन का निर्णय लिया गया था। दोनों पक्षों का यह पूरा विवाद राजनीतिक रंगमंच का एक उक्छूट उदाहरण बन गया है। इसकी शुरुआत बजट सत्र में संसद द्वारा राष्ट्रीय सम्मान अपमान निवारण (संशोधन) विधेयक, 2026 पारित किए जाने से हुई। इस विधेयक में ‘वंदे मातरम्’ के अपमान को 3 वर्ष तक के कारावास से दंडनीय बनाया गया है और इसे राष्ट्रीय गान के समान दर्जा दिया गया है। याद कीजिए, इसके पहले 2 अंतरे मातृभूमि को वंदना करते हैं और उनमें स्पष्ट रूप से कोई हिंदू धार्मिक संदर्भ नहीं है। लेकिन बाद के अंतरों में इक्षहदू धार्मिक प्रतीक उभरते हैं। मातृभूमि को दुर्गा, लक्ष्मी और सरस्वती जैसी देवियों से जोड़ा गया है। 1937 में नेहरू के नेतृत्व वाली कांग्रेस कार्यसमिति द्वारा एक प्रस्ताव पारित करके ‘वंदे मातरम्’ के केवल पहले 2 अंतरे गाने का निर्णय लिया गया। इसके पीछे मुस्लिम नेताओं की उन आपत्तियों को ध्यान में रखा गया था, जो बाद के अंतरों में मौजूद धार्मिक प्रतीकों को लेकर थीं।

फिर इतना हंगामा क्यों? क्या भाजपा वर्तमान चुनौतियों से ध्यान भटकाने के लिए एक सांस्कृतिक प्रतीक को राजनीतिक हथियार बना रही है? क्या वह राष्ट्रीय प्रतीकों और विरासत पर अपना दावा स्थापित करना चाहती है? या कांग्रेस को ‘हिंदू–विरोधी’, ‘तुष्टीकरणवादी’ और



देशभक्ति से रहित साबित करने की कोशिश कर रही है? हाल ही में नागपुर में भाजपा–नियंत्रित स्थानीय निकाय द्वारा भी केवल 2 अंतरे गाए जाने से उसकी नैतिक श्रेष्ठता का दावा कुछ कमजोर ही हुआ है। दूसरी ओर, क्या कांग्रेस समावेशी राष्ट्रवाद की अवधारणा का बचाव कर रही है या चुपचाप अपने मुस्लिम वोट–बैंक की रक्षा कर रही है? यदि उसका मानना है कि 1937 का समझौता आज भी प्रासंगिक है और बाद के अंतरे एक समावेशी आधुनिक धर्मनिरपेक्ष गणराज्य के लिए धार्मिक दृष्टि से अनुपयुक्त हैं, तो उसे यह स्पष्ट करना चाहिए कि ऐसा क्यों है। वह केवल इतिहास की आड़ लेकर यह नहीं कह सकती कि उसके उस निर्णय के स्पष्ट समकालीन चुनावी निहितार्थ नहीं हैं।

यह गीत आधुनिक राजनीतिक चोपणपत्र के रूप में मुसलमानों के विरुद्ध नहीं लिखा गया था। फिर सवाल यह है कि क्या किसी राष्ट्रीय प्रतीक को उसके ऐतिहासिक समग्र रूप में देखा जाना चाहिए, या बाद के अंतरों में मौजूद धार्मिक प्रतीक उन्हें धार्मिक रूप से विविध भारत के लिए अनुपयुक्त बना देते हैं? और आखिर इसे देशभक्ति की परीक्षा का विषय क्यों बनाया जाए? भाजपा के लिए सभी 6 अंतरों का गायन राष्ट्रवादी प्रामाणिकता और राष्ट्रीय गौरव की कसौटी बन गया है। कांग्रेस के लिए 2 अंतरों तक सीमित रहना अपनी ऐतिहासिक विरासत को बनाए रखने और मुस्लिम भावनाओं से सीधे टकराव से बचने का माध्यम है। और यहीं असली त्रासदी छिपी है। जो गीत कभी भारतीयों को औपनिवेशिक शासन के खिलाफ

एकजुट करता था, आज उसी का इस्तेमाल भारतीयों को एक–दूसरे के खिलाफ खड़ा करने के लिए किया जा रहा है।

नागरिकों के लिए ‘वंदे मातरम्’ के सभी 6 अंतरों को सीखने, समझने और यहां तक कि गाने में भी कोई बुराई नहीं है। इतिहास को केवल इसलिए साफ–सुथरा बनाकर पेश नहीं किया जाना चाहिए कि उसके कुछ हिस्से हमें असहज करते हैं। लेकिन राज्य को भी 19वीं सदी की धार्मिक प्रतीकों से युक्त रचना को देशभक्ति की अनिवार्य कसौटी नहीं बना देना चाहिए। देशभक्ति इस बात से नहीं मापी जा सकती कि कोई व्यक्ति कितनी ऊंची आवाज में गीत गाता है। इसी तरह धर्मनिरपेक्षता का अर्थ यह भी नहीं हो सकता कि हिंदू प्रतीकों से युक्त हर अभिव्यक्ति को राष्ट्रीय जीवन से हटा दिया जाए। भारत की विशेषता हमेशा से यही रही है कि वह इन दोनों को साथ लेकर चलने की क्षमता रखता है।

इसलिए ‘वंदे मातरम्’ के सभी 6 अंतरों को उनके ऐतिहासिक संदर्भ में पढ़ाया और सम्मानित किया जाना चाहिए। राजकीय समारोहों में सरकार द्वारा निर्धारित प्रोटोकॉल के अनुसार यह होना चाहिए कि कौन–सा संस्करण गाया जाए। लेकिन राजनीतिक दलों को अपने कार्यक्रमों में वे कौन–से अंतरे गाते हैं, इसे लेकर निष्ठा की परीक्षा देने के लिए बाध्य नहीं किया जाना चाहिए, जब तक कि संसद या कोई संवैधानिक प्राधिकरण इसके संबंध में कोई अन्य व्यवस्था न करे।

विडंबना बेहद असहज करने वाली है। जो गीत कभी अंग्रेजी शासन के विरुद्ध प्रतिरोध का प्रतीक था, उसे आज उसे हिंदू–मुस्लिम द्वंद्व में घसीट लिया गया है। दोनों दलों ने ‘वंदे मातरम्’ को सांप्रदायिकता बनाम धर्मनिरपेक्षता के मुद्दे में बदल दिया है। यह देशभक्ति गीत आज इतिहास, पहचान और समकालीन राजनीति के चौराहे पर खड़ा है। यह इस बात पर निर्भर करेगा कि हमारे नेता इसके साथ किस तरह संवाद करते हैं कि यह विविधतापूर्ण देश को एकजुट करने वाले राष्ट्रीय प्रतीकों पर विचार करने का अवसर बनता है या फिर दलगत राजनीतिक टकराव का एक और रणक्षेत्र।

इमरान खान को राहत ने बढ़ाई हलचल

महेंद्र वेद

पाकिस्तान की सुप्रीम कोर्ट द्वारा जेल में बंद पूर्व पाकिस्तानी प्रधानमंत्री इमरान खान को चिकित्सकीय जांच और परिवार से मुलाकात की अनुमति दिया जाना, पाकिस्तान की राजनीति में एक नए दौर की शुरुआत का संकेत देता है। यह मामला सिर्फ अस्पताल से जुड़ा नहीं है, बल्कि हो सकता है कि यह किसी बड़े सौदे का हिस्सा हो। हालांकि, अभी तक ऐसा कोई ठोस संकेत सामने नहीं आया है। यह कहना जल्दबाजी होगी कि क्या इतिहास खुद को दोहराएगा, जैसा कि अक्सर होता रहा है, चाहे किसी बड़े जन–आंदोलन के जरिये या फिर अंदरूनी कलह से मौजूदा सरकार के कमजोर पड़ने पर।

शहबाज शरीफ सरकार की आर्थिक हालत खराब है और राजनीतिक स्थिति भी अच्छी नहीं है। गठबंधन से भुटो–जसरदारी परिवार खुश नहीं है। राजनेताओं को लगता है कि सेना द्वारा देश की 300 यूनिट में बांटने की योजना से उनका प्रभाव कम हो जाएगा। अफगानिस्तान के साथ भी टकराव चल ही रहा है। और फिर, इमरान खान का मुद्दा है। पंजाब में उनकी लोकप्रियता अब भी कायम है, लेकिन इसकी अगली परीक्षा अभी बाकी है। इस घटनाक्रम के बीच यह याद रखना जरूरी है कि पाकिस्तान की राजनीति को प्रभावित करने वाली दो प्रमुख ताकतें अब भी मौजूद हैं–पहली सेना, जो कभी इमरान खान का समर्थन करती थी, लेकिन अब प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ के साथ है; और दूसरी ‘ए’ यानी अमेरिका, जो इस क्षेत्र में अपने हितों के मुताबिक पाला बदलने के लिए मशहूर है।

सेना के पास खान पर भरोसा करने की कोई खास वजह नहीं है। प्रधानमंत्री रहते हुए वर्षों तक खान कहते रहे कि वह और सेना एक ही सोच रखते हैं, लेकिन बाद में दोनों के रिश्ते बुरी तरह बिगड़ गए। अप्रैल 2022 में पद से हटाए जाने के बाद, उन्होंने आरोप लगाया कि सेना ने उनके संसदीय बहुमत को ‘चुरा’ लिया है। उन्होंने अमेरिका पर भी आरोप लगाए। खान ने आसिम मुनीर को भी निशाना बनाया था। खान और सेना के बीच मतभेद पारंपरिक नागरिक–सैन्य टकराव से कहीं अधिक गहरे और गंभीर थे। यहीं नवाज शरीफ का मामला अलग नजर आता है। नवाज ने भी सेना से टकराव लिया था। तीन बार सत्ता से हटाए जाने और देश से बाहर किए जाने के बाद भी वह लौटे। उन्होंने वह बात समझ ली, जिसे बहुत कम पाकिस्तानी राजनेता समझ पाए हैं और वह यह कि राजनीति में टिके रहने के लिए सेना के साथ तालमेल



जरूरी है। उनके छोटे भाई शहबाज इस मामले में कहीं ज्यादा माहिर साबित हुए हैं। इमरान का मामला अलग है। वह राजनीतिक दांवपेच खेलने वाले नेता कम और अपनी राजनीतिक सोच पर अडिग रहने वाले नेता ज्यादा हैं। उनकी साफगोई कई बार उनके लिए ही नुकसानदेह साबित होती है। उनकी लोकप्रियता की एक वजह यह भी है कि वह ऐसी बातें कहते हैं, जिन्हें कहने की हिम्मत दूसरे नेता नहीं जुटा पाते।

सेना शायद अब हाशिये पर जा चुके नवाज के साथ काम कर सकती है। उनकी महत्वाकांक्षाएँ चाहे जो भी हों, आखिरकार वह मौजूदा व्यवस्था के दायरे में रहकर ही शासन करना चाहते हैं। इसके उलट खान बार–बार कहते रहे हैं कि वह पूरी व्यवस्था को बदलना चाहते हैं। सेना मुख्यालय में सबसे बड़ा सवाल यही है कि अगर खान को रिहा कर दिया जाता है और वह फिर सत्ता में लौटते हैं, तो पुराने टकराव की स्थिति दोबारा पैदा होने से कौन रोक पाएगा? हो सकता है कि खान सचमुच सुलह चाहते हों। लेकिन, सेना को सिर्फ आज नहीं, भविष्य के बारे में भी सोचना है। और यहीं ‘अमेरिका’ की भूमिका सामने आती है। खान ने एक बड़ी राजनीतिक गलती की। उन्होंने एक ही समय में सेना और अमेरिका, दोनों से टकराव मोल ले लिया। सत्ता से हटाए जाने के बाद खान का ‘विदेशी साजिश’ वाला नैरेटिव, वाशिंगटन की तीखी आलोचना और सेना पर हमले ऐसे समय में हुए, जब पाकिस्तान दुनिया में अपनी जगह को नए सिरे से तय करने के लिए जूझ रहा था।

आज हालात पूरी तरह अलग हैं। अमेरिका को पाकिस्तान में फिर एक उपयोगी साझेदार मिल गया है। मुनीर वाशिंगटन के लिए बातचीत का एक अहम माध्यम बन गए हैं। शहबाज शरीफ नागरिक सरकार का चेहरा हैं। पाकिस्तान ईरान के साथ उस तरह बातचीत कर सकता है, जैसा अमेरिका नहीं कर सकता। ट्रंप सार्वजनिक रूप से

शहबाज और मुनीर, दोनों की तारीफ भी कर चुके हैं। वाशिंगटन के लिए यह ऐसा पाकिस्तान है, जो कुछ ठोस नतीजे दे सकता है। ऐसे में, ट्रंप प्रशासन इस व्यवस्था को क्यों बिगाड़ना चाहेगा? शायद यही वजह है कि कोर्ट का यह आदेश इतना दिलचस्प है। खान को चिकित्सकीय सहायता मिल रही है। लेकिन, वह अब भी कैदी हैं। हालांकि, इसमें एक विरोधाभास भी है। हो सकता है कि सेना भी यह न चाहे कि खान हमेशा जेल में रहें, क्योंकि वह जितने लंबे समय तक जेल में रहेंगे, उनके समर्थकों के लिए उन्हें विरोधी का प्रतीक बनाना उतना ही आसान होगा। नियंत्रित समझौता बेहतर विकल्प हो सकता है। अगर खान दोबारा प्रधानमंत्री बनते हैं, तो क्या होगा? यही सवाल अमेरिका की पूछेगा।

ट्रंप के लिए सवाल यह नहीं है कि इमरान खान लोकतांत्रिक हैं या लोकतंत्र विरोधी, या वह पीड़ित हैं या अपराधी। ट्रंप की विदेश नीति लेनदेन पर आधारित है। उन्हें नतीजे चाहिए। मुनीर और शहबाज बेहतर स्थिति में हैं। वे ट्रंप के एहसानमंद भी हैं और चाहते हैं कि उन्हें नोबेल पुरस्कार मिले। फिलहाल, खान अनिश्चितता के प्रतीक हैं। पर, एक और संभावना भी है। हो सकता है कि वाशिंगटन चुपचाप खान की राजनीतिक वापसी का समर्थन करे, लेकिन अचानक रिहाई के बजाय किसी नियंत्रित समझौते के जरिये।

सुप्रीम कोर्ट का यह आदेश सावधानी से नियंत्रित तनाव कम करने की शुरुआत हो सकता है। सेना शायद खान को थोड़ी राहत देने के लिए तैयार हो, लेकिन इतनी नहीं कि उन्हें पूरी राजनीतिक आजादी मिल जाए। शरीफ सरकार कोर्ट के आदेश का औपचारिक विरोध कर सकती है, लेकिन राजनीतिक तनाव कम करने के लिए खान को कुछ राहत दे सकती है। हालांकि, बहुत कुछ इमरान खान पर निर्भर करेगा। क्या वह सच में सेना के साथ समझौता करेंगे? या फिर समझौते को सत्ता में वापसी की रणनीतिक सीढ़ी बनाकर बाद में पुरानी लड़ाई दोबारा शुरू कर देंगे? मुनीर यही जानना चाहेंगे। शरीफ परिवार और शायद अमेरिका भी। शायद पाकिस्तान अब यह देखने का इंतजार कर रहा है कि क्या एक नया अध्याय शुरू हो सकता है–ऐसा अध्याय, जिसमें कोई भी पक्ष दूसरे को पूरी तरह राजनीति से बाहर न करे। और इस बार, इस क्षेत्र में अपनी गहरी दिलचस्पी को देखते हुए, अमेरिका की नजर शायद सिर्फ पला पलटने पर नहीं, बल्कि इस बात पर भी होगी कि पाकिस्तान की पूरी ‘किताब’ ही न बिखर जाए।

महाराष्ट्र को भाषा संबंधी नियम वापस लेने चाहिए

विपिन पखी

हमारे आधुनिक राजनेताओं पर भरोसा किया जा सकता है कि वे गैर–मुद्दों से मुद्दे बना लेंगे और राष्ट्र के विकास और प्रगति को प्रभावित करने वाली वास्तविक चिंताओं या रोजगार, मुद्रास्फीति और जीवन की गुणवत्ता में सुधार जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों से जनता का ध्यान हटाने में सफल हो जाएंगे। भले ही देश ने अगले 2 दशकों में ‘विकसित भारत’ या एक विकसित राष्ट्र बनने का लक्ष्य रखा हो, राजनीतिक नेता धर्म, भाषा, जाति और क्षेत्र के नाम पर समाज में विभाजन पैदा करके देश को नीचे खींचने की पूरी कोशिश कर रहे हैं। कोई भी देश, जो पहले से ही विकसित है या बनने की आकांक्षा रखता है, उसने कभी ऐसे प्रतिगामी कदम नहीं उठाए और न ही वह देख रहा है। ऐसा ही एक अनावश्यक विवादास्पद मुद्दा जिसे हाल ही में उठाया गया है, महाराष्ट्र से संबंधित है। राज्य सरकार ने अनिवार्य कर दिया है कि सभी ऑटो रिक्शा और टैक्सी चालकों को मराठी सीखनी होगी, अन्यथा उन्हें गाड़ी चलाने का अधिकार खोने का जोखिम उठाना पड़ेगा। कभी ऐसी शिकायतें नहीं सुनी गईं कि चालक यह नहीं समझ सके कि यात्रियों को कहां उतारना है या उन्हें किसी अन्य संचार समस्या का सामना करना पड़ा, भले ही ऐसे बड़ी संख्या में चालक दूसरे राज्यों से हों। नए नियम अत्यधिक भेदभावपूर्ण और असंवैधानिक हैं। कल्पना कीजिए कि यदि अन्य सभी राज्य भी ऐसे नियम लागू करने लगे। भाषा का संरक्षण या उसके उपयोग को प्रोत्साहित करना एक बात है लेकिन किसी की आजीविका छीनने की धमकी के तहत इसे लागू करना दूसरी बात है। यह कदम महाराष्ट्र में संकीर्ण भाषायी राजनीति की ओर एक व्यापक झुकाव को दर्शाता है। इसके संकेत कुछ समय से दिख रहे हैं – स्कूलों में त्रि–भाषा फॉर्मूले को लेकर बार–बार होने वाली खींचतान, शिवसेना (यू.बी.टी.) द्वारा हिंदी ‘थोपने’ का डर खड़ा करना और महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना द्वारा गुंडागर्दी की घटनाएँ, जो खुद को मराठी गौरव का ‘संरक्षक’ बताती हैं। विडंबना यह है कि ये निर्देश उस चीज की



अनदेखी करते हैं जो वास्तव में मुंबई को चलाती है। नौकरियों को भाषायी दक्षता पर सशर्त बनाकर, यह प्रवासी श्रमिकों को नुकसान में डालता है, भले ही उनका श्रम शहर की अर्थव्यवस्था को बनाए रखता है। मुंबई जैसे तेजी से बढ़ते महानगरों में सार्वजनिक परिवहन लचीलेपन, पैमाने और उन श्रमिकों पर निर्भर करता है, जो जहां भी अवसर मौजूद हों, वहां जाने के लिए तैयार रहते हैं। गहरे स्तर पर, यह आंदोलन की स्वतंत्रता के संवैधानिक अधिकार का भी उल्लंघन करता है। संविधान प्रत्येक नागरिक को भारत के किसी भी हिस्से में रहने और बसने तथा कोई भी पेशा या व्यवसाय करने का अधिकार देता है। बीच में लाखों मुंबईकर फंसे हुए हैं, जिन्हें छोड़ दिया गया है, जो अधिक किराया देने या अपनी दैनिक यात्रा में लंबी देरी सहने के लिए मजबूर हैं। यहां चयनात्मक प्रवर्तन का सवाल भी उठता है। यदि अर्ध–सार्वजनिक परिवहन चालकों को मराठी सीखने के लिए कहा जा रहा है, क्योंकि वे दैनिक रूप से जनता के साथ बातचीत करते हैं, तो यही तर्क अन्य सेवा प्रदाताओं पर भी लागू होना चाहिए–सड़क विक्रेता, दुकानदार, डिलीवरी कर्मचारी, व्यवसाय के मालिक, कर्मचारी और बहुत कुछ। केवल ड्राइवरों को लक्षित करना तर्कसंगत नहीं है। मुंबई प्रवासियों द्वारा बनाई गई है। इसलिए सरकार को समावेशी विकास पर ध्यान केंद्रित करना और संवैधानिक स्वतंत्रता की रक्षा करनी चाहिए, न कि संकीर्ण राजनीति के आगे झुकना, जो अवसरों को सीमित और व्यक्तिगत स्वतंत्रता को संकुचित करती है।

अच्छा सोचें और सिर दर्द घटाएं

सरदर्द, आज की जीवनशैली में होने वाली सबसे आम समस्या है और इसका कारण तनाव से लेकर माइग्रेन तक हो सकता है। तनाव की स्थिति में गर्दन की मांस पेशियों में सिकुड़न हो जाती है। शायद आपको यह आश्चर्यजनक लगे कि, अपनी प्रतिदिन की दिनचर्या में थोड़ा सा बदलाव लाकर आप सरदर्द से बच सकते हैं। अगर आपके सरदर्द का कारण भी तनाव है, तो तनाव का मुकाबला करना सीखें।



बच्चों के साथ हो दोस्ती

सोशल नेटवर्किंग साइट पर भी अपने बच्चों से हमेशा जुड़े रहिए, इससे आप उनकी हर वक्त की गतिविधि के बारे में जानकारी ले सकेंगे। इसके लिए अपने बच्चे के साथ दोस्ती कीजिए, उनकी फ्रेंडलिस्ट में खुद को शामिल कीजिए, और उनके हर वक्त के अपडेट से अवगत होते रहिए।

त्वचा और बालों के लिए फायदेमंद हैं भिंडी!

भिंडी हरी सब्जियों में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। यह सेहत के लिए बहुत लाभदायिक होती है। भिंडी को खाने के अलावा भी इसके कई फायदे हैं। आप इसे ब्यूटी प्रोडक्ट्स की तरह भी इस्तेमाल कर सकते हैं। आप भिंडी का इस्तेमाल करके खूबसूरत दिख सकती है। ज्यादा देर तक धूप में रहने से हमारी स्किन काली हो जाती है। इससे छुटकारा पाने के लिए आप भिंडी का मास्क बना कर लगा सकते हैं।



अंगुलियां चटकाना हो सकता है नुकसानदायक



उंगुलियां चटकाने से उंगुलियां के आसपास के मसल्स को काफी आराम मिलता है इसलिए उंगुलियां चटकाने की आदत हर दूसरे इंसान को होती है। जबकि ये आदत गठिया जैसे रोग को जन्म देती है। अगर आपको भी है ये आदत तो इस तरह से छुड़ाएं अपनी ये आदत।

कैसे चटकती हैं उंगुलियां

ऑफिस में बैठे-बैठे या कुछ पढ़ते व लिखते वक्त आप अपने आप उंगुलियों को फोड़ने या चटकाने लगते हैं। ऐसा अमूमन हर दूसरा इंसान करता है। उंगुलियों के चटकने के बाद हाथों को काफी आराम मिलता है जिस कारण लोग और अधिक उंगुलियां चटकाने लगते हैं। कई लोग तो गर्दन की हड्डियां भी सुबह-सुबह उठकर चटकाते हैं। जबकि इस तरह से हड्डियों को या उंगुलियों को चटकाना काफी नुकसानदेह होता है। तो आइए आज हम जानते हैं, उंगुली चटकाने से होने वाले नुकसान और इसे छोड़ने के तरीके।

गठिया का रोग

उंगुलियां चटकाने से गठिया जैसी खतरनाक बीमारी होती है। एक रिपोर्ट के अनुसार उंगुलियों की हड्डियों को चटकाना गठिया रोग का कारण बनता है। इस रिपोर्ट के अनुसार हमारी हड्डियां लिगामेंट से एक दूसरे से जुड़ी होती हैं जिसे जोड़ कहते हैं। इन जोड़ों के बीच एक द्रव होता है जो उंगुलियों के चटकने के दौरान कम हो जाता है। ये द्रव जोड़ों में ग्रीस के समान होता है जो हड्डियों को आपस में रगड़ खाने से रोकता है। ऐसे में बार-बार उंगुलियों के चटकने से जोड़ों की पकड़ कमजोर हो जाती है। साथ ही हड्डियों के जोड़ पर मौजूद ऊतक भी नष्ट हो जाते हैं जिससे गठिया जैसे रोग हो जाते हैं।

इस कारण पड़ती है ये आदत

लगभग हर इंसान को ये आदत होती है। जबकि इस आदत के बारे में कोई किसी को सिखाता भी नहीं है। तो ऐसे में सवाल उठता है कि ये आदत कैसे पड़ती है? दरअसल उंगुलियों को चटकाने से जोड़ों के आसपास की मसल्स और हाथों को आराम मिलता है। इसलिए लोग लिखते-पढ़ते या ऑफिस व अन्य जगह में बैठे-बैठे ही उंगुलियां चटकाने लगते हैं क्योंकि ऐसा करने से उन्हें आराम मिल जाता है।

इस तरह से रोकें

उंगुलियां चटकाना उंगुलियों की हड्डियों के जोड़ों को नुकसान पहुंचाता है। ऐसे में इस आदत को रोकना बहुत जरूरी है। इस आदत को रोकने के लिए ध्यान दें। जब भी आप पढ़ते या लिखने या काम करते वक्त ऐसा करते हैं तो उस वक्त खुद पर फोकस करें। अगर आप कभी गलती से उंगुलियां चटकाने लगते हैं तो तुरंत छोड़ दें। चाहे उंगुलियां कितनी भी दर्द दे रही हों।

हाथों को व्यस्त रखें

उंगुलियां चटकाने से खुद को रोकने के लिए अपने हाथों को व्यस्त रखें। क्योंकि कई बार लोग खाली वक्त में मेट्रो या बस में बैठे-बैठे भी उंगुलियां चटकाने लगते हैं। तो ऐसी स्थिति में अपनी उंगुलियां चटकाने के बजाय पेंसिल या सिक्के से खेलना शुरू करें। या फिर ऑफिस में बैठे-बैठे ऐसा करते हैं तो उस समय कुछ लिखने लगे या ड्राइंग बनाने लगे।

श्वसन नलिका और स्वर ग्रंथि की परेशानियों से मिलेगी निजात

मत्स्यासन दिलाएगा बीमारियों से छुटकारा

योगा एक ऐसी चीज है जिसे यदि रोज किया जाए तो तमाम बीमारियों से शरीर को मुक्त रखा जा सकता है। आजकल योगा का क्रेज युवाओं में बढ़ता जा रहा है। मत्स्यासन अकेला ऐसा आसन है, जिसे विधिवत करके अनेक बीमारियां से छुटकारा पाया जा सकता है। अगर इस आसन का अभ्यास सर्वांगसन के बाद किया जाए तो दोनों आसनों का लाभ दोगुना हो जाता है।



बैकिंग दुनिया के सबसे पुराने व्यवसायों में से एक है, लेकिन समय के साथ इसके स्वरूप व तकनीक में काफी परिवर्तन आया है। आजकल पूरी दुनिया में लोग बेक की हुई चीजों का बहुत बड़े स्तर पर प्रयोग करते हैं। ऐसे में एक प्रोफेशनल बेकर की डिमांड भी काफी बढ़ी है। यदि आपको भी खाना बनाना पसंद है तो आप एक बेकर के रूप में अपना उज्ज्वल भविष्य देख सकते हैं।



क्रिएटिव होना भी जरूरी...

एक बेकर के लिए बेहद जरूरी है कि उसे भोजन व उससे संबंधित सामग्री से बेहद प्यार हो। इसके अतिरिक्त वह बेकरी प्रॉडक्ट्स और उसकी सामग्री से परिचित हो। उसे सिर्फ खाना पकाना ही नहीं आता हो बल्कि अपनी क्रिएटिविटी के बलबूते वह उसे एक नया रूप देने में सक्षम हो।

आसन की विधि

इस आसन को करने के लिए सबसे पहले दरी बिछाकर जमीन पर बैठ जाइए। फिर पदमासन लगाइए। कुहनी का सहारा लेते हुए जमीन पर लेट जाइए। पीछे से सिर के पास हथेली लगाकर धिर को ऊपर उठाकर सिर को इस प्रकार जमीन पर टिकाना चाहिए कि गर्दन, छाती और पीठ अधिक से अधिक ऊपर की तरफ उभरी रहे। शरीर का भार सिर्फ पैरों और सिर पर टिका रहना चाहिए। हाथों से पैरों के अंगुठों को पकड़ लें। दोनों घुटने जमीन से सटे रहेंगे। श्वास-प्रश्वास सामान्य रहेगी। इस क्षमता के अनुसार आसन का अभ्यास 1 से 5 मिनट तक करें। वापस आते समय सबसे पहले हथेली का सहारा लेकर गर्दन को सामान्य अवस्था में लाएं फिर कुहनी का सहारा लेते हुए धीरे-धीरे सामान्य अवस्था में आएँ। जल्दबाजी न करें। प्रारंभ में अधिकांश लोगों को मत्स्यासन में कठिनाई होती है, इसलिए पहले बैठकर पदमासन का अभ्यास करना चाहिए और इसके बाद मत्स्यासन का अभ्यास करना चाहिए।

...तो ये हैं आसन के लाभ

पाचन संस्थान, आमाशय, यकृत, गुर्दे और फेफड़ों पर प्रभाव डालकर इन अंगों से संबंधित रोगों में यह आसन चमत्कारिक लाभ देता है। इस आसन से फेफड़े, श्वसन नलिका और स्वर ग्रंथि के विकार दूर होते हैं। फेफड़े में अतिरिक्त हवा भरने से उनके बंद कोष खुल जाते हैं। यह आसन दमा, क्षय व अन्य श्वसन संस्थान के रोगों में लाभ प्रदान करता है। सर्वांगसन के बाद यह आसन किया जाए तो सर्वांगसन के दौरान गर्दन और ग्रीवामणि की पेशियों में तो तनाव आता है, वह दूर हो जाता है। यह आसन मेरु दंड और पीठ दर्द के रोगों के लिए भी लाभकारी है। गैस्ट्रिक, गले से संबंधित रोग, उच्च रक्तचाप, हाइपो थायरॉइडिज्म आदि में भी उपयोगी है।

बैकिंग के स्वाद में छिपा बेहतर भविष्य

स्किल्स... वैसे तो इस क्षेत्र में कैरियर बनाने के लिए किसी विशेष योग्यता की आवश्यकता नहीं है बस आपको बैकिंग, आइसिंग व डेकोरिंग की जानकारी होनी चाहिए, लेकिन अगर आप चाहें तो अपने स्किल्स में निखार लाने के लिए बैकिंग व कन्फेक्शनरी में शॉर्ट टर्म या डिप्लोमा कोर्स कर सकते हैं। इस कोर्स की अवधि 4 से 6 महीने हो सकती है तथा आप 10वीं व 12वीं के बाद यह कोर्स आसानी से कर सकते हैं। कोर्स के दौरान छात्रों को न्यूट्रिशन, फूड सर्विस, बैकिंग के सिद्धांतों, सैनिटेशन, बैकिंग के दौरान काम आने वाली यशोनरी को चलाने आदि के विस्तार से समझाया जाता है। कोर्स में छात्रों को बैकिंग की बेसिक जानकारी के साथ-साथ एडवांस ट्रेनिंग दी जाती है। इसमें उन्हें इंस्ट्रुटीयल इक्विपमेंट के जरिए सारी सामग्री को मिस्र करना व बेक करना सिखाया जाता है।

आपॉर्नुनिटी...

आप इस क्षेत्र में किसी होटल, बेकरी शॉप, केटरर आदि के जरिए कदम रख सकते हैं। वैसे आप बेकरी मैनुफैक्चरिंग कंपनी के साथ भी जुड़ सकते हैं। आप खुद की बेकरी शॉप भी खोल सकते हैं। यदि आपके अंदर बैकिंग का हुनर लाजवाब है तो आप विदेश में भी नौकरी तलाश सकते हैं।

स्टडी सेंटर्स...

- नेशनल काउंसिल फॉर होटल मैनेजमेंट एंड केटरिंग टेक्नोलॉजी, नोएडा
- एलबीआईआई एचएम, पीतमपुरा, दिल्ली
- दिल्ली पैरामेडिकल एंड मैनेजमेंट इंस्टीट्यूट, दिल्ली

रेसिपी



विधि

माइक्रोवेव सुरक्षित प्लेट में बटर पेपर रखें और ½ कप कंद के टुकड़ों को फैला दें। टुकड़ों के बीच उपयुक्त स्थान रखें और उन्हें एक के उपर ना रखें। 4 मिनट तक माइक्रोवेव पर हाई (पुरे तापमान) पर, बीच में तीन बार पलटते हुए पकाएं। दोनों हाथों पर ¼ टी-स्पून तेल चुपड़े, सेंधा नमक और ¼ टी-स्पून कालीमिर्च को कन्द वेफर पर छिड़के और हाथों से अच्छी तरह से मिलाएं। शेष बची सामग्रीयों से 3 और हिस्से बनाएं। पुरी तरह से ठंडा कर हवा-बन्द डब्बे में संचय करें।

कन्द वेफर

सामग्री

- 2 कप छिले और पतले कटे हुए कन्द
- 1 टी-स्पून तेल
- 2 टी-स्पून ताजी पिंसी हुई कालीमिर्च
- सेंधा नमक , स्वादअनुसार

करीतेपिल्लई पोड़ी

सामग्री

- 1 कप कड़ी पत्ता, 2 टी-स्पून नारियल का तेल/अन्य तेल, 2 टेबल-स्पून खड़ा धनिया, 1 टेबल-स्पून चना दाल, 1 टेबल-स्पून उड़द दाल, 1 टी-स्पून काली मिर्च, 2 टी-स्पून जीरा, 1 टी-स्पून सरसों, 1 टी-स्पून तिल, 2 सूखी कश्मीरी लाल मिर्च, तोड़ी हुई, 1/2 कप सूखा कसा नारियल, 1 टेबल-स्पून कटी हुई इमली, 1 टेबल-स्पून कसा हुआ गुड़, नमक स्वादअनुसार

विधि

एक छोटा पैन गरम करें, कड़ी पत्ता डालकर, धीमी आंच पर 3-4 मिनट के लिए लगातार हिलाते हुए भून लें। निकालकर एक तरफ रख दें। एक छोटे पैन में तेल गरम करें, खड़ा धनिया, चना दाल, उड़द दाल, काली मिर्च, जीरा, सरसों, तिल, लाल मिर्च और नारियल डालकर धीमी आंच पर लगातार हिलाते हुए 5 मिनट के लिए भून लें। ठंडा करने के बाद, कड़ीपत्ता, इमली, गुड़ और नमक डालकर, भिवसर में पीसकर मुलायम पाउडर बना लें। हवा बन्द डब्बे में रखकर जरुरत अनुसार प्रयोग करें।

मुख्यमंत्री साय ने जशपुर एक्सप्रेस योजना का किया शुभारंभ

50 बहनों को दिया आत्मनिर्भरता का उपहार, सौंपे ई-रिक्शा

रायपुर। रक्षाबंधन के पावन पर्व पर मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने आज बगिया कैम्प कार्यालय में महिला सशक्तिकरण और स्वरोजगार की दिशा में महत्वपूर्ण पहल करते हुए जशपुर एक्सप्रेस योजना का शुभारंभ किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने जशपुर जिले की 50 महिलाओं को ई-रिक्शा प्रदान कर उन्हें आजीविका और आर्थिक आत्मनिर्भरता की नई राह से जोड़ा।

रक्षाबंधन के आत्मीय वातावरण में स्व-सहायता समूहों की दीर्घियों ने मुख्यमंत्री श्री साय की कलाई पर राखी बांधी और उनके स्वस्थ एवं दीर्घायु जीवन की कामना की। मुख्यमंत्री ने भी बहनों को रक्षाबंधन की शुभकामनाएं देते हुए उन्हें साड़ी और मिठाई उपहार स्वरूप भेंट की। बहनों के बीच मुख्यमंत्री का आत्मीय अंदाज कार्यक्रम को विशेष बना गया।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि महिलाओं का आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होना सशक्त परिवार और समृद्ध समाज की बुनियाद है। हमारी बहनें आज स्व-सहायता समूहों के माध्यम से विभिन्न आजीविका गतिविधियों से जुड़कर स्वावलंबन की नई इबारत लिख रही हैं। ई-रिक्शा उनके लिए केवल आवागमन का साधन नहीं, बल्कि नियमित आय और सम्मानजनक स्वरोजगार का माध्यम बनेगा। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार का प्रयास है कि महिलाओं को केवल आर्थिक सहायता ही नहीं, बल्कि उन्हें ऐसी आजीविका गतिविधियों से भी जोड़ा जाए, जिनसे वे अपने पैरों पर खड़ी हो सकें और परिवार की आर्थिक प्रगति में अपनी भूमिका को और मजबूत कर सकें।

पिछले रक्षाबंधन पर 14, इस बार 50 बहनों को ई-रिक्शा की सौगात: मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि बहनों को स्वरोजगार से जोड़ने की यह पहल लगातार आगे बढ़ रही है। पिछले रक्षाबंधन पर्व पर भी स्व-



सहायता समूहों की 14 महिलाओं को ई-रिक्शा प्रदान किए गए थे। इस वर्ष 'जशपुर एक्सप्रेस' योजना के माध्यम से 50 और बहनों को ई-रिक्शा उपलब्ध कराए गए हैं। उन्होंने बताया कि राजधानी रायपुर में भी महिलाओं को स्वरोजगार से जोड़ने के उद्देश्य से 92 ई-रिक्शा प्रदान किए गए हैं। ई-रिक्शा चला रही महिलाएं आज प्रतिमाह लगभग 15 हजार रुपए तक

की आमदनी अर्जित कर रही हैं। इससे उनके परिवार की आय बढ़ने के साथ उनमें आत्मविश्वास और आर्थिक स्वतंत्रता भी बढ़ी है। मुख्यमंत्री ने कहा कि जब किसी बहन के हाथ में स्वयं की कमाई आती है तो उसका लाभ पूरे परिवार को मिलता है। बच्चों की पढ़ाई, परिवार की आवश्यकताओं और भविष्य के लिए बचत जैसे अनेक कार्यों में यह आय

सहारा बनती है। सरकार का उद्देश्य प्रदेश की अधिक से अधिक महिलाओं को इसी तरह आयमूलक गतिविधियों से जोड़ना है।

मुख्यमंत्री श्री साय ने स्व-सहायता समूहों की महिलाओं के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि आज हमारी दीर्घायु किराना दुकान, सब्जी व्यवसाय और विभिन्न छोटे उद्यमों सहित अनेक आजीविका गतिविधियों से जुड़ी हुई हैं। अब ई-रिक्शा जैसी सेवाओं में भी महिलाएं आगे आ रही हैं। उन्होंने कहा कि बदलते समय के साथ महिलाओं के लिए स्वरोजगार के नए अवसर तैयार किए जा रहे हैं। सरकार महिलाओं को प्रशिक्षण, वित्तीय सहायता और बाजार से जोड़ने की दिशा में भी लगातार कार्य कर रही है, ताकि उनके उद्यम टिकाऊ हों और उनकी आय में निरंतर वृद्धि हो। मुख्यमंत्री ने कहा कि महिलाओं को स्वरोजगार प्रारंभ करने और अपने व्यवसाय को आगे बढ़ाने के लिए मुद्रा ऋण की सुविधा भी उपलब्ध है। महिलाओं

को इन योजनाओं का अधिक से अधिक लाभ लेकर अपनी रुचि और क्षमता के अनुरूप उद्यम शुरू करना चाहिए। जशपुर एक्सप्रेस से स्वावलंबन की राह होगी आसान: जशपुर एक्सप्रेस योजना के माध्यम से महिलाओं को ई-रिक्शा उपलब्ध कराकर उन्हें स्थानीय स्तर पर रोजगार से जोड़ने का प्रयास किया गया है। इससे एक ओर महिलाओं को नियमित आमदनी का माध्यम मिलेगा, वहीं दूसरी ओर स्थानीय स्तर पर आवागमन की सुविधा भी बेहतर होगी। मुख्यमंत्री साय ने ई-रिक्शा प्राप्त करने वाली बहनों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि वे आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ें और अपने परिश्रम से आर्थिक आत्मनिर्भरता की मिसाल कायम करें। उन्होंने कहा कि आज छत्तीसगढ़ की महिलाएं हर क्षेत्र में अपनी क्षमता साबित कर रही हैं। शासन की योजनाओं और अपनी मेहनत के बल पर वे परिवार की आर्थिक शक्ति बनने के साथ प्रदेश के

विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। मुख्यमंत्री साय ने जशपुर एक्सप्रेस योजना का किया शुभारंभ, 50 बहनों को दिया आत्मनिर्भरता का उपहार, सौंपे ई-रिक्शा

बगिया में विकास कार्यों का भी भूमिपूजन

इस अवसर पर मुख्यमंत्री श्री साय ने बगिया क्षेत्र को विकास कार्यों की सौगात भी दी। उन्होंने लगभग 3 करोड़ रुपए की लागत से बगिया में बनने वाले विश्राम गृह का भूमिपूजन किया। इसके साथ ही बगिया में यादव मोहल्ला तक बनने वाली सीसी सड़क के निर्माण कार्य का भी भूमिपूजन किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में आवश्यक अधीसंरचना और नागरिक सुविधाओं का विस्तार राज्य सरकार की प्रार्थमिकता है। गांवों में सड़क, भवन एवं अन्य बुनियादी सुविधाओं के विकास से लोगों के जीवन में सहूलियत बढ़ने के साथ स्थानीय विकास को भी गति मिलती है।

बस्तर की महिलाओं ने तैयार की बिना शक्कर वाली ऑर्गेनिक काजू-कतली

वन मंत्री केदार कश्यप ने की सराहना

रायपुर। बस्तर अंचल में महिला स्व-सहायता समूह की सदस्यों ने अपनी लगन और नवाचार के दम पर स्वरोजगार एवं उद्यमिता की एक प्रेरक मिसाल पेश की है। बस्तर वनमंडल के अंतर्गत संचालित वन धन विकास केंद्र, बकावंड की धारणी करीत स्व-सहायता समूह की महिलाओं ने स्थानीय वनोपज का मूल्य-संवर्धन करते हुए बस्तर के ऑर्गेनिक काजू और शुद्ध ऑर्गेनिक गुड़ के अनूठे मेल से बिना शक्कर की स्वास्थ्यवर्धक बस्तर काजू-कतली तैयार की हैं। वन मंत्री श्री केदार कश्यप ने काजू-कतली के स्वाद और महिलाओं की उद्यमशील सोच की भूरि-भूरि



प्रशंसा की। समूह की महिलाओं ने मुख्य वन संरक्षक कार्यालय जगदलपुर के रिवाल्विंग फण्ड से ऋण लेकर बाजार दर पर कच्चे काजू की खरीदी शुरू की थी। प्रसंस्करण के बाद इसे खुले बाजार में बेचकर लाभ कमाने के बाद महिलाओं ने नया प्रयोग करते हुए

शक्कर-रहित काजू-कतली बनाई। आधा किलो और एक किलोग्राम की आकर्षक पैकेजिंग में तैयार इस मिठाई को बाजार में ग्राहकों का जबरदस्त प्रतिसाद मिल रहा है। स्व-सहायता समूह की महिलाओं ने सर्किट हाउस जगदलपुर में प्रदेश के वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री श्री केदार कश्यप से सौजन्य भेंट कर उन्हें प्रथम चरण में तैयार की गई बस्तर काजू-कतली भेंट की। महिलाओं ने बताया कि आगामी ऐतिहासिक बस्तर दशहरा और दीपावली के अवसर पर आम नागरिकों के लिए विभागीय आउटलेट रसंजीवनीश के माध्यम से इसकी पर्याप्त आपूर्ति सुनिश्चित की जाएगी।

बिलासपुर-सिलीकॉन वैली के बीच सीधी ट्रेन

हर बुधवार को मिलेगी स्पेशल ट्रेन की सुविधा, छत्तीसगढ़ और दक्षिण भारत की यात्रा होगी आसान

रायपुर। छत्तीसगढ़ बिलासपुर की सिलिकॉन वैली, बेंगलुरु से सीधी कनेक्टिविटी हो गई है। स्थष्ट्रक दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे ने बिलासपुर-यलहंका (बेंगलुरु) - बिलासपुर 18261/18262 साप्ताहिक एक्सप्रेस की सुविधा प्रारंभ कर दी है। केंद्रीय आवासन एवं शहरी कार्य राज्य मंत्री व बिलासपुर लोकसभा क्षेत्र के सांसद तोखन साहू ने बुधवार को बिलासपुर स्टेशन से बिलासपुर-यलहंका बेंगलुरु साप्ताहिक ट्रेन को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। अब



तक बिलासपुर से बेंगलुरु जाने के लिए कोरबा-यशवंतपुर एक मात्र ट्रेन थी। कन्फर्म टिकट नहीं मिलने पर यात्रियों को सिकंदराबाद और नागपुर होकर ट्रेन बदलने की परेशानी भी उठानी पड़ती थी। इस ट्रेन से आईटी प्रोफेशनल्स, उच्च शिक्षा हासिल कर रहे छात्रों से लेकर व्यापारियों तक सभी को लाभ मिलेगा। गाड़ी संख्या 18261 बिलासपुर-यलहंका (बेंगलुरु) साप्ताहिक ट्रेन बिलासपुर से प्रत्येक बुधवार को दोपहर 2 बजे रवाना होगी और

29 घंटे बाद दूसरे दिन शाम 7 बजे यलहंका पहुंचेगी। वापसी में गाड़ी संख्या 18262 यलहंका (बेंगलुरु)-बिलासपुर साप्ताहिक ट्रेन प्रत्येक गुरुवार को रात साढ़े 9 बजे रवाना होगी और 30 घंटे बाद तीसरे दिन शनिवार तड़के 3.30 बजे बिलासपुर पहुंचेगी। पांच राज्यों के 27 प्रमुख स्टेशनों पर ठहराव: साप्ताहिक ट्रेन कुल 1,589 किलोमीटर का सफर तय करेगी। ट्रेन का पांच राज्यों छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश और कर्नाटक के कुल 27 प्रमुख स्टेशनों पर ठहराव दिया गया है। इनमें अधिकांश ऐसे स्टेशन हैं, जहां से हर सप्ताह जोनल स्टेशन से 15 हजार से

ज्यादा यात्री सफर करते हैं। नई सुपरफास्ट एक्सप्रेस में 4 थर्ड एसी सहित 20 कोच: बिलासपुर से बेंगलुरु के लिए शुरू होने वाली नई सुपरफास्ट ट्रेन में कुल 20 कोच होंगे। इनमें 2 एसएलआरडी, 4 सामान्य श्रेणी, 10 स्लीपर क्लास और 4 एसी-डुब्लूडू कोच शामिल हैं। यात्रियों के लिए स्लीपर क्लास का संभावित किराया 870 रुपए, थर्ड एसी का करीब 2,155 रुपए और सेकंड एसी का लगभग 2,990 रुपए होगा। पहले कोरबा-यशवंतपुर एकमात्र ऑप्शन, इससे पहले रायपुर से डायरेक्ट फ्लाइट और बिलासपुर से बेंगलुरु जाने के लिए केवल कोरबा-यशवंतपुर एक्सप्रेस ही उपलब्ध थी।

रिटायर्ड फौजी संभालेंगे सीजी के बाल संप्रेक्षण गृह की सुरक्षा व्यवस्था

रायपुर। प्रदेश के बाल संप्रेक्षण गृहों से बच्चों के भागने की घटनाओं और सुरक्षा व्यवस्था मजबूत करने के लिए उठाए गए कदमों के संबंध में राज्य सरकार ने डिवीजन बेंच के सप्ताह विस्तृत ब्यौरा पेश किया है। अतिरिक्त मुख्य सचिव, छ. ने शपथ पत्र पेश कर बताया कि बाल संप्रेक्षण गृहों की सुरक्षा बढ़ाने, सुरक्षा ऑडिट करना और सुरक्षा के लिए पूर्व सैनिकों की सेवाएं लेने के संबंध में सैनिक कल्याण बोर्ड से पत्राचार किया गया है। चीफ जस्टिस रमेश सिन्हा और जस्टिस रवींद्र कुमार अग्रवाल की डिवीजन बेंच ने केंद्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्रालय को पक्षकार बनाने का निर्देश दिया है। पीआईएल की अगली सुनवाई के लिए कोर्ट ने 24 सितंबर की तिथि तय कर दी है। राज्य सरकार ने हाई कोर्ट को बताया कि महासमुंद बाल संप्रेक्षण गृह से भागे 8 बच्चों में से 5 को बरामद कर लिया गया है, शेष 3 की तलाश जारी है। बिलासपुर से भागे 4 बच्चों में से 3 को वापस लाया जा चुका है और एक बच्चे की तलाश की जा रही है। महिला एवं बाल विकास विभाग ने सभी जिला कलेक्टर, डीजीपी और होमगार्ड्स डीजी को संस्थानों की सुरक्षा ऑडिट व पुख्ता इंतजाम के निर्देश जारी किया है। 26 संस्थानों में 156 पूर्व सैनिकों की तैनाती व सेवाओं के संबंध में सैनिक कल्याण बोर्ड से जानकारी मांगी गई है। पीएचक्यू ने सभी एसपी को नियमित पेट्रोलिंग, रात्रि गश्त, संस्थानों के स्टाफ का पुलिस वेरिफिकेशन, नोडल की नियुक्ति, मॉक ड्रिल और मासिक समीक्षा करने को कहा है। जेजे एक्ट, पॉक्सो और मिशन वास्तव्य के क्रियान्वयन के लिए अधिकारियों, कार्डसलर्स और हाउस मदर्स, फादर्स के लिए आवासीय ट्रेनिंग प्रोग्राम आयोजित किए गए।

महिला एवं बाल विकास मंत्रालय से मांगा जवाब

छत्तीसगढ़ बिलासपुर हाई कोर्ट को केंद्र सरकार की तरफ से बताया गया कि जुवेनाइल और बाल संप्रेक्षण गृहों का प्रबंधन केंद्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्रालय के अधिकार क्षेत्र में आता है। डिवीजन बेंच ने उन्हें पक्षकार बनाने का निर्देश दिया। सुरक्षा व्यवस्था व 156 सुरक्षा गार्डों की तैनाती के वित्तीय भार, मदद के संबंध में पूरी जानकारी शपथ पत्र के साथ पेश करने का निर्देश दिया है।

छत्तीसगढ़ में फिर सक्रिय हुआ मानसून, 18 जिलों अलर्ट

रायपुर। प्रदेश में मानसून की रफ्तार एक बार फिर तेज हो गई है। बीते 24 घंटों के दौरान राज्य के कई इलाकों में हल्की से मध्यम दर्ज की बारिश ने मौसम का मिजाज बदल दिया है। मौसम विज्ञान केंद्र के मुताबिक, आने वाले 24 घंटों तक छत्तीसगढ़ में मानसूनी गतिविधियां पूरी तरह सक्रिय रहने वाली हैं। इससे लोगों को उमस से राहत तो मिलेगी, लेकिन साथ ही कई जिलों में तेज बौछारों का दौर भी देखने को मिलेगा। इन 18 जिलों में आकाशीय बिजली और भारी बारिश का अलर्ट: मौसम विभाग की ओर से

दी गई जानकारी के मुताबिक, प्रदेश के 18 जिलों में खराब मौसम का असर सबसे ज्यादा देखने को मिल सकता है। सुकमा, बीजापुर, दंतेवाड़ा, बस्तर, नारायणपुर, कोंडागांव, जांजगीर-चांपा, रायगढ़, बिलासपुर, कोरबा, जशपुर, गौरेला-पेंड्रा-मरवाही, कबीरधाम, मुंगेली, सरगुजा, सूरजपुर, कोरिया और बलरामपुर में गरज-चमक के साथ आकाशीय बिजली गिरने की आशंका है। इसके अलावा, इन क्षेत्रों में 30 से 40 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से अंधड़ चलने की भी चेतावनी दी गई है। आने वाले 24 घंटों के दौरान राज्य के ज्यादातर हिस्सों में हल्की से मध्यम वर्षा दर्ज की जा सकती है, जबकि एक-दो स्थानों पर वज्रपात के साथ भारी बारिश की संभावना बनी हुई है। राहत की बात यह है कि अगले दो दिनों तक बारिश का यह सिलसिला रुक-रुक कर जारी रहेगा। मौसम विभाग ने आकाशीय बिजली चमकने के दौरान लोगों को खुले मैदानों, खेतों और ऊंचे पेड़ों के नीचे आश्रय न लेने की सख्त हिदायत दी है।

छत्तीसगढ़ में हो रही इस बारिश के पीछे दक्षिणी उत्तर प्रदेश और उससे लगे उत्तर-पूर्वी मध्य प्रदेश के ऊपर बना निम्न दबाव का क्षेत्र मुख्य वजह है। इसके साथ बना चक्रवाती परिसंचरण समुद्र तल से करीब 4.5 किलोमीटर की ऊंचाई तक फैला हुआ है।

राखी का त्योहार

विष्णु भैया

का

उपहार

68 लाख बहनों को मिली सौगात

श्री नरेंद्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री

महतारी वंदन योजना

31 किस्तों में

₹20,075 करोड़

से अधिक राशि अंतरित

सुरक्षा स्नेह और सम्मान का बंधन

छत्तीसगढ़
आम जनसौंप

Visit us : /ChhattisgarhCMO /DPRChhattisgarh www.dprcg.gov.in